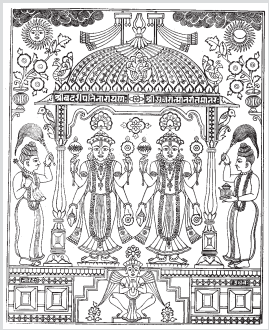

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
९८७९५ ४९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ६ अंक : ६६ अक्टूम्बर-२०१२

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०२
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
०३.	तुलसी पत्र	०४
०४.	चौरासी लारव योनियों में जाने का कारण वासना	०६
०५.	प.पू. बड़े महाराजश्री की अमृतवाणी (सीडनी ओकलेन्ड)	०८
०६.	यह बात आपके कल्याण की है	१०
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	११
०८.	सत्संग बालवाटिका	१३
०९.	भक्ति सुधा	१५
१०.	सत्संग समाचार	१८

॥ अस्मदीयम् ॥

श्रावण तथा अधिक मास में उत्सवों की भरमार थी। कथा पारायण, जन्माष्टमी उत्सव, सम्पूर्ण अधिक पुरुषोत्तम मास में भी सतत उत्सव चलते रहे। प्रत्येक शिखरी मंदिरो में ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद हाथों से हुआ था। इस अवसर का हरि भक्तलोग अचूक लाभ लेने के लिये यजमान बनने का अलौकिक लाभ लिये थे, इससे अपने जन्म की सफलता मानी थी।

सर्वावतारी सर्वोपरि इष्टदेव भगवान स्वामिनारायणने इस कलिकालमें सभी के सुख शान्ति के लिये सभी लोग भजन-स्मरण कर सकें, सत्शास्त्रों का वांचन करे, साष्टांग दंडवत करें, प्रदक्षिणादि करके परमपद को प्राप्त कर सकें। महाराज कल्याण कारी मार्ग को अत्यन्त सुगम बना दिया है। लेकिन एक बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिये कि महाराज हमें प्रत्यक्ष मिले हैं। उनकी उपासना को पवित्र रखियेगा। बस एक ही बात वह यह कि भगवान श्री स्वामिनारायण सर्वोपरि तथा सभी अवतार के अवतारी हैं। यह जीव उस परमात्मा में आत्मसात कर दे तो कल्याण निश्चित समझना चाहिये। दूसरी बात यह कि २४ अक्टूबर को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४० वां प्रागट्योत्सव अमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में धूमधाम से मनाया जायेगा। समस्त सत्संग को पधारने के लिये आमंत्रण है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०१२)

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट अधिकमास के निमित्त ठाकुरजी के अभिषेक प्रसंग पर पदार्पण।

८. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।

९. श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर अधिकमास के निमित्त ठाकुरजी के अभिषेक प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में समूह महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा कथा प्रसंग पर पदार्पण।

सायंकाल चराडवा पदार्पण।

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा अधिक मास के निमित्त ठाकुरजी के अभिषेक प्रसंग पर पदार्पण।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पदार्पण।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर भक्तिनगर मेमनगर द्वारा प.भ. रतिभाई खीमजीभाई पटेल (स्कीम कमेटी सदस्य) की तरफ से आयोजित कथा प्रसंग पर पदार्पण। पी.डी. राव होल - मेमनगर।

१४-१५. मांडवी (कच्छ) पदार्पण।

१६. मेमनगर (बी.डी. राव होल) कथा की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी (निर्माणाधीन मंदिर में) कथा की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर झुंडाल कथा प्रसंग पर पदार्पण।

१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद श्री गणेश चतुर्थी के निमित्त आरती उतारने पधारे।

२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो के) धूलकोट (मूलीदेश) नूतन मंदिर के खात मुहूर्त प्रसंगपर पदार्पण।

२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर कंजरीकंपा पदार्पण।

२३. श्री नरनारायण देव युवक मंडल बापूनगर द्वारा आयोजित लुणावाडा (पंचमहाल) में स्नेह मिलन शिबिर प्रसंग पर पदार्पण।

२६. संत महादीक्षा विधिअपने वरद हाथों से संपन्न किये। अमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में जलझीलणी एकादशीको श्री गणपतिजी की शोभायात्रा में पदार्पण।

रात्रि में नारायणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा आयोजित श्री गणपतीजी की शोभायात्रा में पधारे।

प.भ. श्री घनश्यामभाई पटेल (कुवा) के यहाँ पदार्पण।

२८-२९. श्री स्वामिनारायण मंदिर चोबारी (कच्छ) बागड मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

रात्रि में मूली मंदिर के लिये प्रस्थान।

३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली - सत्संग सभा के प्रसंग पर पदार्पण।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०१२)

१२. मेमनगर भक्तिनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर आयोजित कथा प्रसंग पर पदार्पण।(बी.डी. राव होल)

२१. प.भ. राजदीप भास्करभाई ब्रह्मभट्ट के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा

२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा बाल शिबिर प्रसंग पर पदार्पण।

२६. जलझीलणी एकादशी को श्री गणपतिजी के शोभायात्रा में पदार्पण।

तुलसी पत्र

साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

भगवान विष्णु के श्राप से लक्ष्मी के समान वृन्दा तुलसी के स्वरुप में हो गयी, विष्णु श्री वृन्दा के श्राप से शालिग्राम के रुप में हो गये । दोनो लक्ष्मी नारायण के स्वरुप में है। एकवार गणेशजीने लक्ष्मीजी को असुर की पत्नी होने का तथा वृक्ष होने का श्राप दिया था । उसके बाद लक्ष्मीजी शंखचूड, असुर की पत्नी वृन्दा बनी बाद में भगवान विष्णु के श्राप से तुलसी वृक्ष का रुपधारण करके सदा के लिये भगवान के चरण का आश्रय प्राप्त की । इसी समय में लक्ष्मीस्वरुपा तुलसी तथा भगवान शालिग्राम का नित्य संयोग माना जाता है । भगवान नारायण के नैवेद्य में तथा पूजा में तुलसी का अर्पण अनिवार्य होता है । ऐसा कहा जाता है कि हिमालय के दामोदर कुंड में तुलसीपत्र डालने से शालिग्राम बाहर आ जाते हैं । शालिग्राम की पूजा चंदन एवं तुलसी से की जाती है । रात्रि में शयन के समय तुलसीदल लेकर शालिग्राम के बगल में रखा जाता है । दूसरे दिन अभिषेक के समय वही तुलसी दल अभिषिक्त जल में रखा जाता है. और बाद में उसे चरणोंदक के साथ लिया जाता है। तुलसीदल नारायण (विष्णुं) के अलांवा अन्य किसी को चढाने के लिये निषेधकिया गया है।

पद्मपुराण में कहा गया है कि - स्नान के बाद ही तुलसी पत्र तोड़ना चाहिये । ऐसा न करने से पाप लगता है । स्कन्द पुराण में लिखा गया है कि तुलसी का एक-एक पत्ता नहीं तोड़ना चाहिये पत्ते के साथ पूरी मंजरी तोड़ना श्रेष्ठ है । तुलसीदल तोड़ते समय नीचे के मंत्र का पाठ करना चाहिये ।

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया ।
चिनोमि केशवस्यार्थं वरदा भव शोभने ॥

तुलसीपत्र नीचे बताये समय में नही तोड़ना चाहिये । व्यतिपात वैद्यृति योग, मंगलवार, शुक्रवार, रविवार द्वादशी, अमावास्या, पूर्णिमा, जन्म मरण के सूतक में, मध्याह के समय संध्या के समय, रात्रि के समय तुलीस दल नहीं तोडना चाहिये । निषेधके समय पूजा के लिये तुलसीपत्र को नीचे गिरे उन्हें लेकर पूजाकर सकते हैं । चप्पल जूता पहनकर तुलसी नहीं तोड़ना चाहिये । प्रतिदिन भगवान के भोग में तुलसीत्र रखना चाहिये । सूखे पत्र से भी भगवान की पूजा की जा सकती है।

नित्य प्रातः काल स्नान विधिकरने के बाद अधोनिर्दिष्ट मंत्र बोलकर जल तथा अक्षत चढाना चाहिये। और दीप दिखाना चाहिये।

सौभाग्यं सन्ततिं देवि धनं धान्यञ्च में सदा ।
आरोग्य शोक शमनं कुरु में माधव प्रिये ॥

तुलसी के वृक्ष को घर के अग्रभाग में लगाना चाहिये । यह बात ध्यान रहे कि उनके ऊपर गन्दकी नहीं

होनी चाहिये । उनके अगल बगल जूता-चप्पल नहीं रखना चाहिये । वहाँ पर थूकना भी नहीं चाहिये । तुलसी वृक्ष को बाथरुम के पास भी नहीं रखना चाहिये । साक्षात् लक्ष्मी का स्वरुप मानकर शुद्धता रखनी आवश्यक है । जिसके घर के आगे तुलसी का वृक्ष हो उस भक्त के घर की निशानी कही जायेगी । जब हनुमानजी लंका में सीता की खोज कर रहे थे उस समय उन्हें तुलसी का वृक्ष राक्षसों की नगरी लंका में दिखाई दिया उन्हें बड़ा आनंद हुआ और वे समझ गये कि निश्चित ही यहाँ कोई भक्त रहता है ।

जिसके घर के आगे तुलसी वृक्ष हो उस गृहस्थ का सौभाग्य तथा वंश एवं समृद्धि की सदा रक्षा होती रहती है । इसलिये प्रातः काल में सौभाग्यवती नारी स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान का स्मरण करते हुये तुलसी की पूजा करें ।

भगवान विट्ठल नाथजी द्वारा प्रतिपादित व्रतोत्सव में कार्तिक शुक्ल एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक तुलसी विवाह का उत्सव मनाया जाता है । तुलसी विवाह का उत्सव करने वाले तथा कराने वाले तुलसीदेवी की तरह इष्टदेव में अनुराग कराने वाला होता है । इसी तरह गृहस्थाश्रम का सौभाग्य भी अखंड बना रहता है । अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने विट्ठलनाथजी के व्रतोत्सव की परम्परा को मान्य किया है ।

तुलसीपत्र आरोग्य की दृष्टि से औषधिहै । इसमें रोगप्रतिकारक शक्ति का भंडार है । घर के बाहर हो तो भी उड़ते हुये जन्तुओं का नाश करती है । तुलसीपत्र के सेवन से अनेक हठीले रोगो से मुक्ति मिलती है । इसका विस्तार पूर्वक वर्णन चरक संहिता में किया गया है ।

दान विधी में तुलसी का वृक्ष सभी प्रकार की मनोकामना को पूर्ण करने वाला है ।

घर के सामने तुलसी का वृक्ष हो तो नारायण के साथ लक्ष्मी का वास है ऐसा समझना चाहिये । तुलसी का वृक्ष न हो तो आसुरीवृत्ति का वास समझना चाहिये ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : **www.jetalpurdarshan.com**
छपैया : : **www.chhapaiya.com**
महेसाणा : **www.mahesanadarshan.org**
टोरडा : **www.gopallalji.com**
नारायणघाट : **www.narayanghat.com**
वडनगर : **www.vadnagar.com**

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

चौरासी लाख योनियों में जाने का कारण वासना

– जयंतीभाई के. सोनी (मेमनगर-अमदावाद)

वचनामृत गढडा के अन्त्यप्रकरण के २० वें में दीनानाथ भट्टने श्रीजी महाराज से प्रश्न पूछा – जिसके उत्तर में श्रीजी महाराजने कहा कि ''जीव पूर्वजन्म में जो कर्म किया है वह कर्म एकत्रित होकर एक रस हो गया है । जिस तरह लोहे का गोला अग्नि में तपकर लाल हो जाता है परिपक्वता को प्राप्त करता है ठीक यही स्थिति जीव की है वह अपने स्वभाव के अनुसार कर्म करता है और वासना के फल को भोगता है । इसी तरह पूर्वकर्म के अनुसार ही यह मनुष्य शरीर मिली है तथा पूर्वकर्म के अनुसार ही अन्य योनियां मिली है । इसी तरह अपने पूर्व कर्मानुसार वह जीव सुख-दुःख, हानिलाभ जय-पराजय को प्राप्त करता है । पूर्वकर्म के अनुसार ही यह मनुष्य शरीर भरत खण्ड में मिला है फिरभी इस लोक में असह्य दुःख को सभी लोग भोग रहे हैं । वह इसलिये कि पूर्वकर्म को भोगना ही पड़ता है ।

अध्यात्म : आध्यात्मिक दुःख या अन्य प्रकार की व्याधि-महाबिमारी होती है जिससे शरीर में पीड़ा होती है और वह मर जाता है ।

अधिभूत : राज्य में राजा (सरकार) दंड लगाकर लूटता है – (टेक्स इत्यादि के माध्यम से) राज्य के बाहर एकान्त में चले जाइए तो चोर डाकू लूट लेते हैं ।

आधिदैविक : प्रमाणिकता से व्यापार – धंधा करने पर भी किसी केस में फंसजाने पर कोर्ट-कचहरी, डॉक्टर, वकील इत्यादि के माध्यम से आर्थिक लूट होती है । इस तरह नानाविधदुःखों में जीवन व्यतीत करना पड़ता है । खेती में सूखा-दाहा, टिड्डिभ इत्यादि से सारी फसल नष्ट हो जाती है । इस तरह अनेकों दुःख देखने पड़ते हैं ।

त्यागाश्रम में अथवा गृहस्थाश्रम में भगवान में दृढ निश्चय हो जाय और महिमा अन्तर में उत्तर जाय तो महाराज उस जीव को अपने धाम में ले जाते हैं । परंतु इस योनि में भगवान की भजन या अन्य कोई पुण्य जो नहीं करते वे चौरासी लाख योनियों में भटकते रहते हैं । इस के प्रमाण में श्रीजी महाराज ने कहा है कि जिस तरह समुद्र में जितना पानी है उतना माता के दूधका जीवने पानकिया है । इस चौरासी लाख योनियों में जीव अपने किये हुये पुण्य – पाप के अनुसार ही यमराज उस जीव को सोने के दरवाजे से, चांदी के दरवाजे से, तांबा के दरवाजे से लोहे के दरवाजे से किये गये पुण्य-पाप के कर्म फलानुसार पुण्य-पाप कर्मफल चुकाने के लिये लेजाते हैं ।

सोना का दरवाजा : जो बहुत पुण्यशाली होता है उसी जीव को सोने के दरवाजा से सन्मान के साथ रथ ऊपर, पालकी में बैठाकर धर्मराज के पास लेजाया जाता है । वहाँ धर्म राजा पूछते हैं कि आपने पुण्यकर्म किये है ? तब वह जीव अपने जीवन का लेखा जोखा सुनाता है – जैसे ब्रह्मचर्य पालन, भगवान की भजन, ज्ञानवार्ता या तप किया है, जीवों को भगवान के मार्ग पर ले गये हो, न्यायपूर्वक धन सम्पत्ति कमाये हो, साधु-ब्राह्मणों को भोजन खिलाये हो, मूकप्राणियों को घासचारा पानी खिला-पिलाकर तृप्त किये हो, इस तरह पूछे जाने पर वह सभी सुनाता है । ऐसे पुण्यात्मा को धर्मराज सत्यलोक में लेखाकार के रुप में रखते हैं । यह ब्रह्मांड जब तक रहेगा तब तक सत्यलोक में सुख भोगता रहेगा । उपरोक्त कहे के अनुसार पुण्य कर्म किया हो, परंतु रजो गुणी हो तो उसे रुपा के दरवाजे से जाना पड़ता है ।

रुपाका दरवाजा : रथ पर बैठाकर या पालकी में बैठाकर धर्मराज के पास ले जाया जाता है । वहाँ धर्म राज पूछते हैं कि इस तरह सौ जन्मतक पुण्य कर्म किया हो तो

मनुष्य के सौ जन्मोतक लेखाजोखा करने के लिये देवलोक में भेंज देते हैं। जो पचास जन्म तक पुण्य कर्म किया हो तो उसे पचास जन्म तक मनुष्यों के कर्मफल लिखने के लिये देवलोक भेज देते हैं, जो २५ जन्म तक पुण्य कर्म किया हो तो पचीस जन्म तक मनुष्यो के कर्म फल को लिखने के लिये देवलोक भेजं देते हैं। वहाँ के सुख को उन-उन वर्षो तक भोगता है।

तांबा का दरवाजा : थोड़े पुण्य कर्म करने वाले जीव को तांबा के दरवाजे से ले जाया जाता है। उसे मार नहीं पडती - जीव धर्मराज को अपने किये हुये सभी पुण्य कर्म को सुनाता है। बाद में धर्मराज उस जीव को पुन: मनुष्य शरीर देते हैं। वह जीव जितना पुण्य कर्म किया रहता है उसके अनुसार लेख लिखवाकर उतने वर्ष तक जीव सुख भोगता रहता है। यदि जीव कहता है कि मैं पुण्य कर्म नहीं किया हूं तो उसे चौरासी लाख योनियों में भेंज दिया जाता है। अधोनिर्दिष्ट योनियों में समयमर्यादा के अनुसार वह शरीर धारण करता है।

(१) जलजंतु की नवलाख योनियों में देहधारण करता है।(२) पक्षीकी १० लाख योनिर्यां।(३) पशु की ३० लाख योनियां (४) २० लाख उद्भिज योनियां। (५) ११ लाख सरिसृप योनियां।(६) ४ लाख मनुष्य की योनियां।(७) इस में दो लाख उत्तम मनुष्य की योनि तथा दो लाख मध्यम योनि।

मनुष्य योनी में भगवान का निश्चय करके जो भजन-भक्ति करें तो निश्चित ही जीव का मोक्ष होगा। परन्तु मनुष्य योनि में आकर जो पाप कर्म करते हैं, हिंसा करते हैं, व्यभिचार करते हैं, लूटपाट करते हैं, वे सभी लोग लोहे के दरवाजे से मारते पीटते हुये लेजाये जाते हैं। वहाँ पर १६ पुर (नगर) है इन सभी नगरो में से मारते घसीटते हुये धर्मराज के पास ले जाते हैं। धर्मराज पुण्य-पाप का रजिस्टर निकलवाकर देखते हैं। जिसका जितना पुण्य-पाप होता है उसके अनुसार ही उसे दंड निश्चित करते हैं। दूसरी स्त्री के साथ संग करने वाले को अग्नि तप्त लोहे से एक हजार बार बाहों से चिपकाया जाता है। मदिरा पान करने वाले के मुख में गरम शीशा डाला जाता है। जो मांस खाये होते हैं उनके मुख में जलता कोयला डाला जाता है। इस तरह जीव के कर्मानुसार धर्मराज दंडनिश्चित करते हैं। लेख देखकर किसी को १० कुंड में डाला जाता है किसी को पचास कुंड में तो किसी को १०० कुंड में डाला जाता है। इस तरह छ लाख चौरासी हजार कुंड हैं। इस तरह अनंत दु:खो में से मुक्त होने के लिये इसी जन्म में भगावन के सिवाय अन्य पदार्थ में वासना न हो तथा भगवान या भगवान के भक्त में ही उत्तम विचार आवे तो निश्चित ही उपरोक्त योनियों में जाना नहीं पडेगा। भगवान की कथा वार्ता सुने, नवधा भक्ति करे, कुसंग का त्याग करे, भगवत्पारायण होकर नित्य-निरन्तर उन्ही में आत्मसात् हो जाय तो निश्चित ही वह संसार सागर से तर जायेगा। सुज्ञ भक्त भगवान से सम्बन्धित सभी वातो को हृदय में उतारकर दृढ संकल्प करके, अहंकार का त्याग कर प्रभु की प्राप्ति में इस मनुष्य शरीर की सार्थकता करले।

प.पू. बडे महाराजश्री को वं...द....न... प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एल.ए. मंदिर में पधारे उस समय की स्तुति .....

वंदु बड़े मोटा महाराज, एल.ए. मंदिर पधार्या छे आज।
दुर्लभ दर्शने महादु:ख जाय, जेने पूजे प्रभुजी पूजाय।
परमगादी नरनारायणदेव, सदा आपे करी जेनी सेव,
रह्या सदाय प्रसन्न मन, जोइने राजी आश्रित जन।
मधुरी वरसे मुख वाणी, विचरो सदा उमंग आणी।
पुन्य पूर्वना प्रगटे जेना, दिव्य भाव सदा रहे तेना।
जग मा विचर्या गाँवो गाँव, कर्या तीर्थक्षेत्र ठामेठाम।
यज्ञ उत्सवो करे छे आज, फरे देश परदेश महाराज।
मोटी महिमा एवो हुं जाणी, मारी सुफल करु छु वाणी।
टाळ्या जेने अज्ञान अनादि, विराजी नरनारायण गादि।
मनथी शरणुं शुद्ध भावे, अंते अक्षरधाम सिधावे।
हाथ आव्युं छे एवुं आटाळुं, नहि मळे ए खरचे नाणुं।
राजे रोम रोम श्रीजी प्रकाश, सदा श्रीजी तणो जेमा वास।
जन जाणो महिमा उमंगे, कह्यो मति प्रमाणे प्रसंगे।
श्रीजी मूरति मन उर रहजो, मांगु तववास आशिष देजो।
नेह नवलो नित नित थाय, प्रभु साथे दृढ प्रीति बंधाय।
श्रीहरि सूत कोश-तेज-देव, चरणानुरागी सेवक राम मुक्त।

प.पू. बड़े महाराजश्री की अमृतवाणी (सीडनी ओकलेन्ड)

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)
सहयोग : पार्षद श्री कनुभगत गुरु पार्षद वनराज भगत

भगवान स्वामिनारायण के समय में पांचसौ परमहंस थे। जो सभी विद्वान, कलाकुशल, अच्छे वक्ता, तथा सम्पूर्ण ऐश्वर्य से सम्पन्न थे। स्वामिनारायण भगवान प्रथमवार एक प्रयोग किये। ब्रह्मचारी वासुदेवानन्द वर्णी को अपनी गद्दी पर बैठाकर आरती उतारे। यह प्रयोग एक दो दिन तक ही चला। लम्बा नहीं चला। दूसरे संत भी उसी कोटि के थे इसलिये किसी को अच्छा नहीं लगा। वर्णी को भी महाराज से इतना सम्मान करवाना, अपनी गद्दी पर बैठाना एक बोझ जैसा लगने लगा। अब महाराज के सामने रोने लगे, महाराज ! यह भार हमसे ढोया नहीं जायेगा, हम तो त्यागी है।

बाद में भगवान स्वामिनारायण अपने दोनो भाईयों को बुलाये। संत-भक्तों की भरी बड़ी सभा में महाराज ने दोनो भाईयों से कहा कि आप दोनो अपने एक-एक पुत्र हमें दीजिये। जो पुत्र योग्य हो स्वयं नीति में रहे और हमारी गद्दी पर बैठकर आश्रितों को भी धर्म का पालन करा सके। स्वयं महाराज की इच्छा से दोनो भाईयों ने एक एक पुत्र दे दिया। वेदोक्त विधिसे दोनों को महाराज ने दत्तक पुत्र लिया, जिसमें बड़े भाई के पुत्र को अमदावाद गद्दी का आचार्य बनाया तथा छोटे भाई के पुत्र को वडताल की गद्दी का आचार्य बनाया। इस तरह महाराजने स्वयं धर्म देव के कुल में से आचार्य पद पर स्थापना की थी।

अहमदाबाद की गद्दी के आचार्य परंपरा में स्वामिनारायण भगवानने एक युनिक सिस्टम बनाया है। स्वामिनारायण संप्रदाय के आचार्य विवाहित हों तथा उन्हीं के पुत्र परम्परा के आचार्य हों। महाराज ने आचार्य के बहुत सारे धर्म के नियम बताये हैं। आचार्य को किसी स्त्री के साथ बात नहीं करना होता और स्पर्श करना तो अत्यंत वर्जित है। आचार्य की जो पत्नी हो वें ही संप्रदाय की आश्रित महिला वर्ग की गुरु होती है। वे ही महिला वर्ग को मंत्र दीक्षा दे सकती है ऐसा भगवान स्वामिनरायणने आज्ञा दिया है। उसी समय से यह परंपरा प्रारंभ हुई और वर्तमान में चल रही है। श्रीहरि द्वारा निश्चित किये गये दो आचार्य के मुख्य कर्तव्य हैं। मूर्ति प्रतिष्ठा तथा संत दीक्षा। जिस मूर्ति की प्रतिष्ठा आचार्य महाराज करते हैं तथा संत दीक्षा देकर गुरु मंत्र देते है वह संप्रदाय में मान्य गिना जाता है। मूर्ति भी पूजनीय होती है अन्यथा नहीं।

बहुत समय पूर्व एकबार शारजाह दुबई गया था। इस समय नियम बहुत कम हो गया है, उन दिनो बहुत कड़क नियम था। हमारे साथ पूजा में हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति थी। ऐसी मूर्ति साथ लेजाने के लिये निषेधथा। चेकिंग के समय अधिकारियों ने रोका। मूर्तिको देखकर वे सब कहने लगे, ये कौन है ? साथ नहीं लेजा सकते ? एक क्षण तो मन में ऐसा विचार आया कि यदि ये मूर्ति को लेजाने से रोकेंगे तो हम यहीं से वापस लौट जायेंगे। परंतु दूसरे क्षण विचार आया और मैने कहा ये मेरे दादा है, वे मूर्ति को देखे और मेरी तरफ देखकर कहे कि ''अच्छा लेजाइये।'' आचार्य के मुख्य दो कार्य है।(१) मूर्ति प्रतिष्ठा करना, (२) संत दीक्षा देना तथा गुरुमंत्र देना। जिन मूर्ति की प्रतिष्ठा आचार्य महाराज करते हैं वही मूर्ति संप्रदाय में मान्य समझी जाती है। वही पूजा के योग्य है। इसी तरह आचार्य महाराजश्री जिनसन्तो को दीक्षा दिये हों तथा गृहस्थ को गुरु मंत्र दिये हो उसी संत हरिभक्त को श्रीजी महाराजने आश्रित कहा है। आचार्य द्वारा दीक्षा प्राप्त साधु ही स्वामिनारायण संप्रदाय के साधु है।

स्वामिनारायण भगवान कई लोगो से कहते थे कि, मृत को जीवीत करना चाहिये । महाराज कई बार मरजी में आये तो मृत को भी जीवीत कर देते थे । क्योंकि भगवान होने के कारण वे स्वयं ही असमर्थ थे । परंतु यह भी कहते थे कि मनुष्य को बार-बार मरना ना पड़े ऐसा जीवन जिवीत करने की कला हमें आती है । शिक्षापत्री में महाराजने वह मार्ग दिखाया है । प्रत्येक धर्मग्रंथ, सत्शास्त्रो के सारस्वरुप सारी बाते महाराजने शिक्षापत्री में लिखी है । किसी भी धर्म या सम्प्रदाय के आश्रित मनुष्य यदि इस शिक्षापत्री का वांचन करे तो उसे यह प्रतीत होगा की यह तो हमारे धर्म की बात है । क्रिश्चन धर्म के अनुयायी को लगेगा कि १० वाँ नियम तो हमारे धर्म में भी है ।

रोज बरोज किस प्रकार जीवन व्यतीत करना चाहिए उसकी Day to Day कला धर्म के माध्यम से स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री में शीखाई है । उदाहरण स्वरुप महाराजने लिखा है कि आय से अधिक खर्च नहीं करना चाहिये । जिससे मनुष्य के जीवन में बड़ा दु:ख आने पर यह आज्ञा महत्वपूर्ण हो जाती है ।

स्वामिनारायण भगवान द्वारा लिखित एक शिक्षापत्री सरमाल्कम ने उस समय भी ब्रिटीश गवर्नमेन्ट को भेट स्वरुप प्रदान की । उस शिक्षापत्री को आज भी ब्रिटीश म्युझियम ओक्सफर्ड युनिवर्सीटी में रखा गया है । बोन्ड लिखकर होने के बाद मंदिरों में शिक्षापत्री दर्शन हेतु लेजाने दिया जाता है । तथा संपूर्ण सिक्योरिटी के साथ । वर्तमान में शिक्षापत्री को सुरक्षित रखने हेतु किसी को स्पर्श नही करने दिया जाता । इतनी अधिक शिक्षापत्री को महत्व दिया जाता है । कुछ वर्षो पहले हम दर्शन करने की इच्छा से वहां गये तो हमे स्पर्श ही नही करने दिया । जब संतोने कहा कि यह शिक्षापत्री जिन्होने लिखी है वे उनकी छट्ठी पेढी के पुत्र है । यह सुनकर उन्होने स्पर्श करने दिया ।

शिक्षापत्री प्रत्येक संप्रदाय के आश्रितो के लिए उपयोगी है । परंतु उसी संप्रदाय में रहकर कन्वर्ट हुए बिना, सभी अपना धर्म संपूर्ण रुप से माने, वहीं स्वामिनारायण भगवान का हेतु है ।

एक अंग्रेज अधिकारीने महाराज से कहा था कि, हम इतने सिपाही रखते हैं । वो भी अभी हमारे ओर्डर एक साथ नही मान सकते तो आप अपने इतनी बड़ी संख्या के आश्रितो को तथा आपके साथ भ्रमण करने वाले त्यागी-गृही तथा घोडसवार हथियारधारी पार्षदो को कैसे मेन्टेइन करते हैं । महाराजने कहा यह प्रश्न हमारे आश्रितो से ही पूछिये । तब महाराज के साथ के एक काठी दरबार घोडसवार पार्षदने उस अधिकारी से कहा कि आपके जो सिपाही है उसी प्रकार हम स्वामिनारायण भगवान के सिपाही है । हम बिना पगार लिये ही उनके साथ भ्रमण करते हैं । यदि युद्ध हो जाये तो हम हमारे भगवान के लिए जान भी दे सकते हैं । उन्होंने हमें शिक्षा के माध्यम से जीवन व्यतीत करने कि कला शिखाई है । व्यसन मुक्त किया है । यह हम सभी का वेतन है । उत्तर सुनकर अधिकारी आश्चर्य हो गया कि युद्ध हो जाये तो मेरा लश्कर होने पर भी इन घुड़सवार सिपाहीओं को नही जीत पायेगें ।

अपने आगामी उत्सव

आश्विन शुक्ल-२ ता. १७-१०-१२ बुधवार को श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव ।

आश्विन शुक्ल-१० ता. २४-१०-१२ बुधवार को श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ४० वाँ प्रागट्योत्सव श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में सम्पन्न होगा ।

आश्विन कृष्ण-२ ता. ३१-१०-१२ बुधवार को श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला का पाटोत्सव ।

दीपोत्सव कार्यक्रम

धनतेरश : आसो कृष्ण-१२ रविवार ता. ११-११-२०१२ ।

कालीचतुर्दशी : आश्विन कृष्ण-१३ सोमवार ता. १२-११-२०१२ हनुमानजी का पूजन शाम ६-३० बजे ।

दिवाली : आश्विन कृष्ण-१४/३० मंगलवार ता. १३-११-२०१२ शारदापूजन-चोपडा पूजन शाम ५-१५ बजे ।

नूतनवर्ष : कार्तिक शुक्ल-१ बुधवार ता. १४-११-२०१२ अन्नकूटदर्शन

मंगला आरती सुबह : ५-०० बजे
श्रृंगार आरती सुबह : ६-३० बजे
राजभोग आरती सुबह : १२-०० बजे
अन्नकूट दर्शन दोपहर : १२-०० से ३-३० बजे तक

यह बात आपके कल्याण की है

- अतुल बी. पोथीवाला (मेमनगर-अमदावाद)

प्रथम तो धर्म में रहना दूसरे भगवान के स्वरुप की उपासना करनी, तीसरे भगवान के अवतार चरित्र का श्रवण कीर्तन करना चौथा भगवान के नाम का स्मरण करना ये चार वात ही जीवन में कल्याणकारक है।

धर्म में रहना कब कहा जायेगा - जो परमहंस हों, ब्रह्मचारी हों, वे नियमानुसार ब्रह्मचर्यादिक का पालन करते हों तो उसे धर्म में रहना कहा जायेगा। जो स्त्रियां है वे कहे हुये नियमानुसार अपने धर्म का पालन करें तो उसे धर्म पालन कहा जायेगा । इसी तरह सत्संगी गृहस्थ बताये गये नियम में रहते हुये अपनी मां, बहन, पुत्री के, साथ एकान्त में न बैठें तथा उसकी तरफ दृष्टि करके न देखे तो उसे धर्म कहा जायेगा।

चाहे जैसा भी समाधिनिष्ठ हो अथवा विचारवान हो यदि वह स्त्रियों के प्रसंग में रहने लगे तो उसका धर्म रह नही सकता। इसी तरह कीतनी भी धर्म में रहने वाली स्त्री हो पुरुष के सहवास से उसका भी धर्म नहीं रहेगा । इसलिये अपने अपने धर्म में रहना ही सभी के कल्याण का सूचक है। हमें जो सर्वोपरि श्रीहरि का स्वरुप मिला है उसका ध्यान तथा उसी की उपासना करनी चाहिये . इसके साथ ही भगवान का चरित्र गाना, सुनना, स्मरणकरना प्रभु को प्राप्त करने का सुगम मार्ग है।

श्रीहरि ने आत्मज्ञान की वात वारंवार की है। परंतु उससे आत्मकल्याण होगा ऐसा कभी नहीं मानना चाहिये। यदि आत्मा को शरीर से अलग मान ले तो शरीर का मोह नहीं रह जायेगा। इसी तरह शरीर के जो भी सम्बन्धी है उनसे भी प्रीती नहीं रहेगी। इससे भगवान की भक्ति करने में कोई विघ्न नहीं आयेगा। केवल आत्मज्ञान से कल्याण हो जायेगा ऐसा कभी नहीं मानना, आत्मदर्शन करके कल्याण करना चाहिये। अन्यथा तुमडी, बाधकर समुद्र पार करने की बात होगी । भगवान का चरित्र गाना, सुनना भगवान का स्मरण करना यह आत्मकल्याण के लिये सरल मार्ग है। भगवान की मूर्ति की उपासना, भगवान के चरित्र को सुनना तथा भगवान के नामका स्मरण करना इसके साथ ही धर्माचरण करते रहना आत्मकल्याण की सुगमता का परिचायक है। जिन्हे भगवान की मूर्ति का आश्रय हो धर्माचरण के साथ तीनो उपरोक्त नियम में रहता हो तो संसार सागर से बड़ी सरलता से पार हो जायेगा। अने आ तमे सर्व छो ते मने भगवान जाणो छो ते अमे ज्यां ज्यां उत्सव समैया कर्या होय ने जे ठेकाणे परमहंस ब्रह्मचारी तथा हरिभक्त सत्संगी बाई-भाई सर्वे भेगा थया होय ने अमे कीर्तन गवराव्यां होय ने वार्ता करी होय ने अमारी पूजा थई होय ये आदिकने अमारां लीला चरित्र तेने कहेवां ने सांभडवा ने तेनुं मनमां चिंतवन करवुं, अने जेने एनुं अन्तकाले चिंतवन जो थई आव्युं होय तो तेनो जीव भगवान ना धाम ने जरुर पामे। माटे एवां जे अमारा सर्वे चरित्र किराया तथा नाम स्मरण ते कल्याण कारी छे - अने तमारे सर्वने मारे विषे विश्वास छे ने हुं तमने जेवी तेवी अवड़ी वाते चढावी दऊँ तो जेम सर्वेने कूवां मां नाखी ने ऊपर थी पाणा नी शीला ढांके त्यारे तेने नीकलवानी आशा ज नहीं। तेम तमे पण मारा वचनने विश्वासे करीने अवडे मार्गे चढी जाओ ते तेमां मारुं शुं सारुं थाय ? माटे ''आ वार्ता तमारा कल्याणनी छे'' ते में तमने हेते करीने कही छे ते सारुं तमे सर्वे हवे आवी ज रीते समजीने दृढपणे वर्तजो।''(ग.म. ३५) कल्याण की ऐसी सुगम वार्ता को श्रीहरिने समझाया है। इसलिये इधर-ऊधर की वात किये विना चार नियम का पालन करते रहना। बृद्धि से दूसरे तर्क वितर्क नहीं करना।

श्रीहरि के चरित्रों का सदा स्मरण करने का मार्ग अत्यंत सुलभ हो गया है। पवित्रता की गोंद ऐसी श्री स्वामिनारायण म्युजियम में आकर प्रत्येक खंड में संग्रहीत श्रीहरि के दिव्य स्पर्श वाली अद्‌भुत प्रसादीकी वस्तुओं का दर्शन करके प्रभु के लीला के चरित्रों का उसके साथ समन्वय करना चाहिये । इससे हृदय में आत्यन्तिक शान्ति का अनुभव होगा। श्री स्वामिनारायण म्युजियम यह मात्र म्युजियम ही नहीं है, हम सभी के कल्याण का संग्रह स्थान है। सभी दोष को दूर करने के लिये तथा निर्दोषभाव होकर श्रीहरि के इस संग्रहालय का दर्शन करके कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करें।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्रीजी महाराज के समय में कैसे कैसे हरिभक्त रहे होंगे ? महाराज को प्रसन्न करने के लिये कैसी भेंट देते रहे होंगे ? वह साक्षात् दर्शन कराने वाली यह दिव्यमाला डोरामें गुथी हुई है। सुरती डोरा में छोटाछोटा मनका बनाकर यह माला तैयार की गयी है। ऐसे १०८ मनका की यह माला किसी हरिभक्त ने महाराज को अर्पण की है। उस समय उसे इस धरती पर ही अक्षरधाम का अनुभव हुआ होगा।

कारण यह कि ''श्री स्वामिनारायण'' षडक्षरी मंत्र का जप करने के लिये माला का उपयोग करते है - तो इस माला को बनाते समय उसी हरि भक्त के मन में अखंड षडक्षर मंत्रका ध्यान रहा होगा और परम सुख एवं शान्ति की प्राप्ति हुई होगी।

प.पू. आचार्य महाराजश्री के वंश परम्परामें सुरक्षित यह बेनमून माला श्री स्वामिनारायण म्युजियम के होल नं. १ में रखा गया है। जब आप दर्शने करने जांय तो अचूक उसका दर्शन करें। उसके साथ ही एन्लार्ज करके माला की तसवीर भी वहाँ पर रखी गयी है। उस माला में ग्रन्थी का सूक्ष्मता से दर्शन करने से इसी तरह धैर्य पूर्वक सेवा करने की अन्य को प्रेरणा मिलेगी।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

श्री स्वामिनारायण म्युजियम भेट - सितम्बर-२०१२

रु. २,००,०००/- एक सत्संगी बहन
रु. १५,०००/- महेशभाई एस. पटेल, लालोडावाला
रु. १३,०००/- सुधीरभाई पी. पटेल, बापुनगर
रु. ११,१०१/- सविताबहन मनुभाई पटेल, अमदावाद
रु. ११,०००/- धीरजभाई के. पटेल, अमदावाद
रु. १०,०००/- पूनमभाई मगनभाई पटेल, अमदावाद
रु. १०,०००/- सुशीलाबहन जानी, अमदावाद
रु. ८,७५०/- रमेशभाई केराई, गोडपर
रु. ६,०००/- एन. एच. प्रधानानी, मुंबई
रु. ५,१००/- कांतिलाल जादवभाई सोनी, अमदावाद
रु. ५,१०१/- पटेल अविचल कृष्णाकान्त, मणीनगर
रु. ५,००१/- अवसर फेसन, अमदावाद
रु. ५,००१/- जेरामभाई सी. कानानी, अमदावाद
रु. ५,०००/- अ.नि. मणीबहन मंगलदास पटेल, नरोडा
रु. ५,०००/- सुशीलाबहन विष्णुप्रसाद ठाकर, ओढव
रु. ५,०००/- गंगाबहन बेचरभाई पटेल, साबरमती
रु. ५,०००/- पटेल हरिभाई माधवलाल, वेजलपुर
रु. ५,०००/- चेतनाबहन जयंतीभाई मिस्त्री, अमदावाद
रु. ५,०००/- सोनी रसिकभाई दयालजीभाई, अमदावाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावली (सितम्बर-२०१२)

ता. २-९ श्री घनश्याम महिला मंडल, श्री स्वामिनारायण मंदिर, धमासणा
ता. ५-९ कु. माही श्रीजी के प्रसन्नार्थे, राणीप
ता. ७-९ श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज, लालोडा
ता. ८-९ भीमजी करशन जीणा, लंडन
ता. ९-९ पूजाबहन जीतेन्द्रकुमार पटेल
ता. ११-९ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल, मेमनगर
ता. १५-९ रमेशभाई अंबालाल पटेल, विराटनगर
ता. १५-९ श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा युवती मंडल पंचम वर्ष निमित्त, पर्थ-ओस्ट्रेलीया
ता. १६-९ सुनीलभाई ठक्कर, घनश्याम कार्ड
ता. १६-९ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल, साबरमती
ता. १९-९ पीनलकुमार दशरथभाई पटेल, राणीप
ता. २३-९ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल, हिंमतनगर
ता. २३-९ सुधाकरभाई त्रिवेदी, अमेरिका
ता. २३-९ अमदावाद स्थित बलोल (भाल) सत्संग समाज।

श्री नरनारायणदेव की मूर्ति का अभिषेक

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के हाल नं. ८ में स्थित श्री नरनारायणदेव की मूर्ति का अभिषेक हरिभक्त स्वयं कर सकते हैं। यह लाभ अन्यत्र मिलना कठिन है। मात्र ५१०००/- रु. में ए लाभ हरिभक्त को भी मिल सकता है। पांच हरिभक्त एक साथ मिलकर के भी यह लाभ ले सकते हैं। अथवा कोई सत्संग मंडल भी उपरोक्त धनराशी भरकर यह लाभ ले सकता है। इससे अभिषेक कराने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ रही है। कभी कभी तो एक ही दिन में दो-तीन अभिषेक नोट करवाये हैं। इससे अधिक जानकारी हेतु फोन द्वारा याँ म्युजियम में प्रत्यक्ष आकर जानकारी कर सकते हैं।

चिंतन चरणाविंद चरणारविंद का

(शा. हरिप्रियदास - गांधीनगर)

समस्त दुनिया सुख के पीछे भागती है । किसी का पर्याय सुख की प्राप्ति नही होती । क्योंकि यथार्थ सुख का पता किसी के पास नहीं, तो सभी दु:खी होते है इसलिये कहा गया है कि,

''राजा भी दु:खिया,
रंक भी दुखिया धनवान दु:खी विकार में
बिना विवेक भेख सब दु:खिया,
संत सुखी संसार मे.''

संसार में सभी दु:खी है लेकिन जिसे सुख का सही पता मिला हो वही सुखी हुये है । तो चलो हम उन्हीं से पूछते हैं सुख का पता बतायें । सुखी हुए लोगोने इस प्रकार पता बताया है

सुखपुर, नरपुर, नागपुर ए तीन मे सुख नाही,
सुख है हरि के चरण में का संतन के माही ।

तो वास्तविक पता मिलान् ''सुख है हरि के चरणों में ।'' क्या भगवान के चरणो का आश्रय आपने किया है ? भगवान के चरणों के सोलह चिन्हों का चिंतन किया है । तो चलो करते है भगवान के सोलह चिन्हों का चिंतन । उसमें कैसा प्रभाव है, प्रताप है वह जानकर आश्रय करके सुख प्राप्त करते हैं ।

जव रेखायें चरण के अंगूठे के मूल में ''जव'' आकार का चिन्ह है । उसका ध्यान करनेवाले को अन्न मिलता है । आत्मा-परमात्मा का ज्ञान होता है ।

बज्र : दाये चरण के अंगूठे में ''जव'' का चिन्ह के नीचे वज्र आकार का चिन्ह है । उसका ध्यान करने से अंत:शत्रुओं को नाश होता हैा । वज्र जितनी शक्ति प्राप्त होती है । इसका ध्यान करने से पापरुपी पर्वत का नाश होता है ।

उर्ध्वरेखा : दांये चरण के अंगूठे तथा ऊँगलियों के बीच में है । इस रेखा के ध्यान से ऊर्ध्वगती की प्राप्ति होती है ।

जामुन : दाये चरण के जामुन के आकार के चिन्ह है । उसका ध्यान करने वाले का मन मायिक पदार्थों से बाधित नही होता ।

केतु (ध्वजा) : दाये चरण के तलवें में वज्र, जामुन, उर्ध्वरेखा की दायी ओर ध्वजा का चिन्ह है । उसका ध्यान करने से कामरुपी सत्रु से तथा मायीक सुख के वासना पर विजय प्राप्ति होती है ।

केतु (ध्वजा) : दाये चरण के तलवें में वज्र, जामुन, उर्ध्वरेखा की दायी ओर ध्वजा का चिन्ह है । उसका ध्यान करने से कामरुपी सत्रु से तथा मायीक सुख के वासना पर विजय प्राप्ति होती है ।

पद्म (कमल) : ''ध्वजा'' के चिन्ह के दायी ओर पद्म आकार का चिन्ह है । इस चिन्ह का ध्यान करनेवाले भक्त संसाररुपी समुद्र से निर्लेप हो जाते है । जिस प्रकार कमल का पुष्प जल के मध्य में रह कर भी जल से अलिप्त रहता है ।

अंकुश : पद्म के चिन्ह के नीचे अंकुश आकार का चिन्ह है । इस चिन्ह को धारण करने वाले भक्त मनरुपी दोन्मत्त तायी पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं ।

अष्टकोण : महाराज के दाये चरण में बहार की तरफ यह स्वस्तिक आकार का चिन्ह है । इस चिन्ह का ध्यान करनें वाले भक्त के सभी पापों का नाश होता है । तथा मोक्ष प्राप्ति होती है ।

इस प्रकार दाये चरण में नव चिन्ह का ध्यान, उसके चिंतन से फल की प्राप्ति होती है । अब बायें चरण के चिन्हों की बात करते हैं ।

कलश : महाराज के बायें चरण में अंगूठे के नीचे कलश: आकार का चिन्ह है । इस चिन्ह का ध्यान करने से भक्त मंदिर का सर्वोच्च स्थान शिखर प्राप्त करता है । भक्त अक्षरधाम रुपी शिखर प्राप्त करता है ।

अर्धचन्द्र : बाये चरण में ऊर्ध्वरेखा की बायीं तरफ ऊर्मियों में यह चिन्ह शोभित है । इस चिन्ह का ध्यान करने वाला भक्त स्वयं भक्तिमार्ग में वृद्धि प्राप्त कर अक्षरधाम गमन करता है ।

व्योम (आकाश) : महाराज के बाये चरण के तलुए में अर्धचन्द्र की बायी ओर यह चिन्ह शोभित है । इस चिन्ह का ध्यान करने से श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त कर आकाश के समान भक्त निर्लेपी हो जाता है । तथा अक्षरधाम प्राप्त

करता है।

धनुष्य : बाये चरण में उर्ध्वरेखा की बांयी ओर धनुष्य आकार का चिन्ह शोभायमान है। उसका ध्यान करने से भक्त कामादिक शत्रुओ पर विजय प्राप्त करता है।

गोपद : महाराज के बाये चरण में धनुष्य के बायी ओर गोविंद (गाय के चरण की खरी) आकार का चिन्ह है। उसका ध्यान करने से भक्त किसी परिश्रम के बिना संसाररुपी समुद्र को पार कर सकता है।

त्रिकोण : बाये चरण तलवे के अंदर की ओर इस चिन्ह का ध्यान करने वाले भक्त को इस संसार के त्रिविधताप से मुक्ति प्राप्त होती है। त्रिविधदेह त्याग कर ब्रह्ममय होकर श्रीहरि के चरणो की प्राप्ति होती है।

मत्स्य (मीन) : बाये चरण के बाहर की ओर इस चिन्ह का ध्यान करने से भक्त को कठोर समय में भी निडरता से जीवन निर्वाह करने की शक्ति प्राप्त होती है।

देखा बालमित्रो ! महाराज के चिन्हो का ध्यान करने से कितनी शक्ति प्राप्त होती है। इन चिन्हों को याद रखने के लिए प्रेमानंद स्वामी ने चेष्टा के पदो की रचना की है। निष्कुलानंद स्वामीने भी चिन्ह चिंतामणी में भगवान के सोलह चिन्हों का अद्‌भुत महिमा का वर्णन किया है।

●

भक्तरक्षा

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

भगवान किसकी रक्षा करते है ? जिसे भगवान के प्रति आस्तिक भाव हो। जीव दो प्रकार के होते है। (१) आस्तिक (२) नास्तिक।

आस्तिक अर्थात् श्रद्धालु, मुमुक्षु, दैवीजीव

ऐसे मुमुक्षुजीवो के लिए भगवानने अपना नाम ''आस्तिक'' पसंद किया। जनमगंल नामावलि में ''२२ वाँ'' नाम प्रभु का ''आस्तिक'' है।

जिसे भगवान के प्रति ऐसी श्रद्धा हो तो परमेश्वर सदैव मेरी रक्षा करे। आस्तिक का अर्थ है सर्वत्र भगवान। सदैव मेरी रक्षा करना। ऐसी श्रद्धा का अर्थ ही आस्तिक आसक्ति होता है।

अपने आश्रितजनो की क्या भगवान रक्षा नही करते ? करते ही है परंतु अज्ञानी जीव यह नही समझ पाता। ''भगवान के आश्रित का प्रभु दुःख आसानी से हर लेते है। भक्तो ! आप भी ऐसी दृढ श्रद्धा रखना प्रभु आपकी अखंड रक्षा करेंगे।

एक संत थे। उनका नाम अखंडानंद स्वामी। सदैव भक्ति भजन आनंद में अलमस्त रहते थे। उनका नाम अखंडानंद स्वामिनारायण भगवानने रखा था। निर्भय होकर विचरण करना, कथा उपदेश देते रहते, इस प्रकार अपेक्षा से रहित अखंडानंद स्वामी रहते थे।

अति विचरण से अनुभव भी ज्यादा हुआ। अंजान रास्तों पर अंजान मनुष्यो से अंजान घोर जंगल में सभी परिस्थितियों का सामना किया।

एक समय घोर जंगल में से जा रहे थे। महाराज के दर्शन करने हेतु। ग्राम्य विस्तारो में सत्संग करवाकर लौट रहे थे। वहाँ जंगल में चार शेर सामने मिलकर दहाड़ने लगे। अखंडानंद स्वामी गभराये नही। निर्भयता से शेर के सामने खड़े हो गये। मन में विचार किया कि देह का अंतिम संस्कार होकर मट्टी में मिल जाना उससे तो अच्छा है कि चार जानवरों का पेट भरजाय। और स्वामिनारायण भगवान के धाममें जाने का अवसर प्राप्त होगा। परंतु प्रभु तो सर्वत्र है। परंतु परमकृपालु भगवानने विचार किया कि मेरे साधु को यह चार शेर मार देंगे तो मुझे दयालु कौन समझेगा ? संत के हृदय में भगवान है तो क्या शेर में नही होंगे ? शेर में भी प्रभु का आवास है। भगवान शेर की मनोवृत्ति बदल दी शेरने तराप मारने की जगह अखंडानंद स्वामी के पैरो में लोटने लगा। पैर चाटने लगा। स्वामीने विचार किया, यह परिर्तन किस प्रकार संभव हुआ ? उसे बदलने वाले कौन ? स्वामिनारायण भगवान।

जब अखंडानंद स्वामी गढपुर में आये श्रीजी महाराज के सन्मुख दंडवत प्रणाम कर समस्त वार्ता की। प्रभुने कहा, मैं शेर के भीता प्रवेश कर आपकी रक्षा की। आप का चरण स्पर्श शेर बनकर किये। परिक्रमा की। कारण आप जैसे श्रद्धालु तथा भक्ति से समृद्ध संत धन्य है। आपकी रक्षा तो हमें करनी ही थी। सज्जनो ! भगवान भक्त की रक्षा करने के लिये सदैव तत्पर हैं। जब-जब भक्त को कष्ट आता है, भगवान भक्तों की रक्षा करने दौड़ आते हैं। दयानंद स्वामी कीर्तन में लिखते है कि,

जहाँ जहाँ भीड पड़त भक्तनकुं तहाँ तहाँ होत सहाई रे।
दयानंद को नाथ दयाणु भजो भाव उर भाई रे ॥

इसीलिए किसी भी प्रकार के कष्ट में भगवान पर से विश्वास नहीं त्यागना चाहिए। क्योंकि भगवान का नाम ''आस्तिक'' कहा गया है।

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"समझदार मनुष्य बचने की उपाय करता है"
(संकलन : कोटक वर्षा-नटवरलाल - घोडासर)

एक दिन एक मनुष्य जंगल में पैदल जा रहा था। ऐसे में अचानक उसके पीछे सिंह पड़ता है, बचने हेतु वह मनुष्य दौड़ता है। दौड़ते दौड़ते वह रास्ते में एक गड्ढा देखता है, तो आगे जाना अशक्य हो जाता है। मनुष्य बचने के लिये आगे दृष्टि करता है। पास में एक वृक्ष था। उसकी शाखा पकड कर मनुष्य लटक जाता है। उसी शाखा के नीचे खाई थी। उपर दृष्टि की तो जाना कि उसी शाखा को सफेद और काले दो चूहे काट रहे है। तो जाये तो जाये कहाँ ? बचने का कोई उपाय ही नही था। शाखा मे एक मधु का छत्ता था। एक मधुं की बूंद जिभ पर गिरी जो मीठा स्वाद मिला। एक क्षण के लिए मनुष्य भूल गया की नीचे खाई है. पीछे शेर है। चूहे शाखा को काट रहे है। हम सब की भी ऐसी ही परिस्थिति है. हम सभी के उपर सिंहरुपी मृत्यु का भय सदैव रहता है। सफेद तथा काले चूहे दिवस तथा रात है। मधु की बूंद माया रुपी आवरण है। सिंहरुपी मृत्यु से मनुष्य कभी नहीं बच सकता। और हम आयुष्य की सीमा को दिवस रात के साथ व्यतीत कर रहे है। मनुष्य माया रुपी मझ्झु का स्वाद चखने में खो जाता है।

"अजब आ जगत छे, उडा छे एना पाया।
बधुं जाणवा छतां, मेलाती नथी माया॥"

नाराज लोग सोचते है कि संसार भोगने हेतु मिला है तो क्यो ना अभी भोग लिया जाय ? मोजमजा की जाय। मृत्यु आयेगी तो देखा जायेगा। परंतु जो समझदार हैं ? जो बचने का उपाय करते हैं। तथा विचार करते है कि मनुष्य जीवन भोगने के लिए नहीं है। बचने का एक मात्र उपाय है। ध्यान करने से उसे परमात्मा की पहचान होगी। जब हम अन्तर की यात्रा करते है तो आत्मचिंतन द्वारा हमें हमारे दोषो का ज्ञान होता है। इन दोषो को दूर करके परमात्मा की ओर आगे बढ़ना चाहिए। धार्मिक जीवन। प्रार्थना, भजन, कीर्तन, ही वह माध्यम है। प्रथम चरण है। कथा-श्रवण से शांति मिलेगी। समूह में की प्रार्थना सभी के कल्याण की भावना होती है। इसीलिए सत्संग सदैव समूह में होता है। महाराज जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं। महाराज को मैं, मेरा से अधिक "हमारा" राज्य पसंद है। यदि आपको तैरना आता हो और स्वयं को बचा लिया जाय इसमें कोई बड़ी बात नहीं है। परंतु आप के तैरने की आदत से दूसरों का भला हो जाये तो इससे उत्तम कार्य और कोई नहीं।

●

अध्यात्म प्रार्थना
- लाभुबहन मनुभाई पटेल (कुंडाल)
(राग सोरठ)

स्रुन माता जशोदा गोरी, तेरे लाल अंगुठी चोरी... सून,
करत रसोई अपने करते काढी धरी एक ढोरी,
कण जानुं कण करके माई, नजर चोराई मोरी... सून
लछन तेरे नवल लाल के मे नही जानत भोरी,
ले के सरक गयो लरकन मे, करकर बात ठगोरी... सून
नित नित घर में खेठ के, माखन लेन जोरा जोरी,
ब्रह्मानंद कहे याली, लीला, ऐसी लाख करोरी...सून

सहजानंद स्वामी के सखा संत निष्काम ब्रह्मानंद स्वामी एक सिद्ध हस्त कीर्तनकार के रुप में ध्रुव तारे के भांति संप्रदाय रुपी आकाश में शोभायमान है। वैभव उनके मन को डिगा नही पाया। गायकवाड़ सरकार ने पचीस गाँव देने की लुभावनी घोषणा भी ब्रह्मानंद के ब्रह्मरुपी आनंद में से विचलित नहीं कर पायी। ऐसे अग्नि मन के प्रतिभाशाली इस कोकिल कंठ के साथ ही माधुर्यभाव पूर्वक भी थे।

यशोदा माता को गोपियाँ कान्हाजी की शिकायत करती, तो यशोदाजी उन्हें पकडने के लिए दौडती थी। मीठी मधुर बाते करके, गोपियो का ध्यान भ्रमित करके गोपीयों की अंगूठी चुरा लेते थे। उस का काव्य स्वरुप वर्णन तथा रचना स्वरुप इस पद का परिचय कीर्तन साहित्य सागर की गागर नही, मात्र एक बिंदु स्वरुप है।

पद के अंतिम चरण में कविराज कृष्णजीवन लीला में मग्न हो जाते है। ऐसी प्रभु की अनेक लीला का वर्णन है।

''अहो प्रभो ! अचरज माया तुम्हारी,
जीस में मोहे सकल नरनारी ।
जीस पर कीरपा होय तुम्हारी, सो जन उतरे पारी,
ब्रह्मानंद शरण मे आयो लीजिये मोहे उगारी,
अहो प्रभु ! अचरज माया तुम्हारी ।''

●

लूंटारें से बचाया

- पटेल जानकीबहन नीकिकुमार (गुलाबपुरावाले)

श्रीहरि एक बार जेतलपुर में थे । गाँव-गाँव से हरिभक्त गण दर्शन करने पधारे । गाँव में संतरामपुर के वालजी जेतलपुर में श्रीजी महाराज के दर्शन के हेतु पधारे । जब जेतलपुर छः किलोमीटर दूर था तब दूर से घोडे पर सवार लूंटारे आ गये और संघ को घेर लिया । संघ के मनुष्यो में भाई तथा बहनें भी थीं । हाहाकार मच गया ? भक्तजनो ने जोर जोर से श्रीहरि का स्मरण करना शुरु कर दिया । प्रभु से प्रार्थना करने लगे कि प्रभु हमारे प्राणो की रक्षा कीजिये हमारी लाज रखिये । यदि आप आज हमें नही बचायेंगे तो दुनिया वाले भी यही समझेगे स्वामिनारायण भगवान के दर्शन करने गये थे और क्या पाया ?'' प्रभु तो आपकी रक्षा करने भी नही आये । आपके नामका कलंक लगेगा । तभी अंतर्यामीने इस करुणनाद को सुनकर माया की रचना की । हजारो घुडसवार उन लूंटेरो को मारने आ रहे हैं ऐसी माया रची । लूंटेरोने सोचा कि यह तो भगवान के सैनिक है । हमारी हत्या कर देंगे । लुंटेरे भाग गये । प्रभु की रचित माया भी अदृश्य हो गयी । भक्तो की रक्षा हो गई । भक्तजन श्रीहरि का स्मरण करते हुए जेतलपुर पहुंच गये । श्रीहरि अक्षर महोल सभा में बिराजमान थे । भक्तगण प्रभु के दर्शन करके धन्य हो गये ।

●

करजीसण में श्रीहरिने अद्‌भुत लीला की

- पटेल रेखाबहन कीर्तिकुमार (ऊँझा)

अमदावाद से महेसाणा जाने वाले रेलमार्ग पर डांगरवा स्टेशन आता है । वहाँ से करजीसण ६ किलोमीटर दूर है । यहाँ पर नरनारायण देव गद्दी का बड़ा सुन्दर मंदिर है । यह मन्दिर दक्षिणाभिमुखी है । इस मन्दिर में श्री घनश्याम महाराज की पटमूर्ति है ।

इस गाँव में श्रीहरि ३४ बार पधारे थे । प्रभु के बार-बार आने से यहाँ की भूमि अति पवित्र हो गयी है । गाँव की भूमि के दर्शन मात्र से आत्मशान्ति मिलती है । जन्म-जन्म के पाप धुल जाते हैं । इस गाँव में एक सुन्दर तालाब है, जिसमें महाराज संतो के साथ अनेकों बार स्नान किये थे । बगल में एक बड़ा बगीचा है इसमें श्रीहरि कई लीला किये थे । यहाँ पर एक वरखड़ा का विशाल वृक्ष है । इसके नीचे बैठकर श्रीहरि अनेकों बार भोजन किये थे । वहाँ पर श्रीहरि का चरणाविन्द है । गाँव के उत्तर तरफ भी एक छत्री है । वहीं पर एक विशाल वट वृक्ष था । इस वृक्ष में झूला डालकर श्रीहरि झूलते थे ।

करजीसण गाँव की लीला का पठन करने से श्रीजी महाराज का दर्शन होता है । प्रभु की कृपा से यहाँ के भक्त सुखी हैं ।

भक्तचिंतामणी के २३ वें प्रकरण में लिखा है कि -

पछी काठीए सज्या ठेकाण,
मांड्या मूणु मले घोडे पलाण ।
हाहा करता गुर्जर देश,
आव्या करजीसण जई संत बोलाव्यां ॥

करजीसण के गोविंदभाई श्रीहरि के परम भक्त थे विनयपूर्वक कहने लगे कि आप हमारे ऊपर कृपा करके हमारे घर पधारें । प्रभु ! पन्द्रह दिन से हम आपके साथ रहते हैं । मेरा सब कुछ आपके आधीन है । मेरी इच्छा है कि सन्तों के साथ आप मेरे घर पधारिये । प्रभु उनकी भावना समझकर संवत् १९६९ में जब गोविंदभाई के घर खाने के लिये पधारे उस समय हमारे घर में मात्र २५ मन बाजरी थी, उस साल सूखा पड़ा था अन्न हुआ नहीं प्रभु की कृपा से वही २५ मन अन्न पूरे वर्ष चला घर के लोग तथा नात रिस्तेदार भी खाये लेकिन घटा नहीं, यहीं प्रभु की लीला है । भक्तों के आधीन होकर उनकी नाना विधकमी भी पूर्ति करते रहते है ।

●

कुसंग

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

कुसंग तीन प्रकार का बताया गया है । (१) अन्तर का कुसंग, (२) बाहर का कुसंग (३) सत्संग का कुसंग । श्रीजी महाराज शिक्षापत्री में लिखे है कि - चोर, पापी,

व्यसनी, पाखंडी, कामी, व्यभिचारी ये छ प्रकार के कुसंग बताये और कहे कि इनकी संगत नहीं करनी चाहिये ।(१) दूसरा कुसंग है अन्तर का - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान, ईर्ष्या, राग, द्वेष मात्सर्य, छलकपट, दंभ इत्यादि । तीसरा कुसंग है सत्संग में कुसंग - श्रीहरिने वचनामृत के १७ प्रकरण में कहा है कि - सत्संगमें वातावरण बिगाडने वाले कुसंगी कहे जाते हैं । ऐसे लोग स्वयं कुछ नहीं करते सत्संग में आकर दूसरो के साथ गप्पा मारते है और केवल राग - द्वेष-इर्ष्या की बात करते हैं । जब कुसंग आता है तो बुद्धि मलिन हो जाती हैं इसलिए कुसंगियों का संग कभी नहीं करना चाहिये । स्वयं को उनसे बचना है ।-

नाम चोखो रंग चोखो उज्ज्वल एनुं रुप ।
कंकु साथे मेल करीने फैंके नमाव्या भूप ॥
मगनी साथे मेल करीने चोखो थयो बदनाम ।
रंग खोयो रुप खोयुं लोके पाड्या खीचडी नाम ॥

चावल कितना साफ होता है लेकिन वही चावल मूग के साथ मेल करले तो उसका नाम बदनाम हो जाता है चावल से खीचड़ी नाम पड़जाता है । कुसंग का फल कड़वा होता है सत्संग का फल मीठा है । कुसंग जगत में डुबाता है , सत्संग संसार सागर से पार करता है । कुसंग का योग हो तो ब्रह्मरुप हो तो वह भी देहरुप में पतित हो जाता है । कुसंग के संग से भक्त की भावना भी नष्ट हो जाती है । फिल्म, टी.वी., क्लब, ब्युटी पार्लर, जूआ, पर स्त्री गमन, अनीतिका धन, परदोष दर्शन, स्त्रैणपुरुषों का संग, ये सभी कुसंग केवल दु:ख देने वाले होते है, पतन के कारण हैं । इन से दूर होने का प्रयत्न करना चाहिये । ये सभी क्लेश के कारण हैं । जिसके पास बैठने से अपने में दोष दिखाई दे, अन्त:करण शुद्ध दिखाई दे, प्रभु में भक्ति भाव बढता हो तो समझना चाहिये कि सत्संग हो रहा है । जिसके पास बैठने से, खड़े रहने से, भगवान के प्रति भाव भुलाता हो अच्छे मे खराब दिखाई देता हो, राग-द्वेष, मात्सर्य का भाव आता हो तो समझना चाहिये कि कुसंगी का साथ हो रहा है । इस प्रकार का साथ जल्दी छोड़ देना चाहिये । सतत इसका मन में चिन्तन करते रहना चाहिये कि किस में हमारी हानि है और किसमें हमारा लाभ है । सदा सत्संग की उत्तरोत्तर वृद्धि हो ऐसा एक लेखा जोखा रखना चाहिये ।

लुणावाडा में युवा सत्संग शिबिर

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापूनगर-हीरावाडी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पंचमहाल जिले के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के आयोजन से ता. २३-९-१२ रविवार को युवक मंडल की सत्संग शिबिर आयोजित हुआ था । प्रात: ९-०० बजे प.पू. महाराजश्री संत मंडल के साथ लुणावाडा के सरदार पटेल हाईस्कूल के विशाल होल में दीप प्रज्ज्वलित करके शिबिर का शुभारंभ किये थे । श्रीहरि के नाम धुन के बाद प.पू. महाराजश्रीकी उपस्थिति में नारणपुरा मंदिर के महंत स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी, शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी, स.गु. शा.स्वामी निर्गुणदासजी, पू. हरिस्वरुपदासजी इत्यादि संत इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान की आज्ञा-उपासना, श्री नरनारायणदेवकी महिमा, दान भेंट, श्री नरनारायणदेव गद्दी की व्यवस्था सुदृढ हो, मंदिरों की संख्या तथा देखभाल, सत्संग विवेक इत्यादि के विषय पर बहुत सुंदर प्रवचन करके संप्रदाय के मूल सिद्धांतो को समझाया था ।

प.पू. महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद में मोक्ष तक अपने अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये बहुत सारे उदाहरण देकर कथानक के माध्यम से समझाया था । इसके साथ ही लुणावाडा, बालासिनोर, कोठंबा, संतरामपुर, इत्यादि बड़े केन्द्रो से सदस्य छोटे-छोटे गाँवो में जाकर सत्संग की प्रवृत्ति करें ऐसा कहकर सभी के ऊपर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की ।

अगल बगल के गाँवो से बड़ी संख्या में युवान एकत्रित हुये थे । इसके अलावां अमदावाद, बापूनगर, विस्तार से भी युवक मंडल लक्झरी बस में भरकर शिबिर में भाग लेने आये थे । इस कार्यक्रम में सदस्य शुल्क सभी ने १००/- रुपये देकर नये १० श्री स्वामिनारायण मासिक पत्रिका के ग्राहक बने थे । प्रत्येक युवको को प.पू. महाराजश्री के चरण स्पर्श का सुख मिला था । लुणावाडा मंदिर के महंत स्वामी वासुदेवचरणदासजी स्वामी के मार्गदर्शन में भोजन प्रसाद की सुंदर व्यवस्था की गयी थी ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायम मंदिर अहमदाबाद में अधिक मासमें समूह महापूजा तथा जलझीलणी एकादशी को गणेशजी की शोभायात्रा

भरत खंड के अधिष्ठाता भगवान श्री नरनारायणदेव के अलौकिक सानिध्य में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं पू. स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत) की शुभ प्रेरणा से अधिक मास में अपने प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाये गये । अधिक मास के शुभ अवसर पर अमदावाद मंदिर में महापूजा का सुंदर आयोजन किया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री इस प्रसंग पर पधारे थे । महापूजा में अलौकिक लाभ देकर भक्तों को प्रसन्न किये थे और हार्दिक आशीर्वाद भी दिये थे ।

भाद्र शुक्ल-११ को श्री गणपतिजी के विसर्जन के अवसर पर परम्परा के अनुसार अमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में तथा पूजनीय संतो-हरिभक्तों एवं श्री नरनारायणदेव उत्सवी मंडली बगाने जाने के साथ दोपहर में ३-३० बजे नारायणघाट पहुंची थी । जहाँ पर ४-४५ बजे प.पू. लालजी महाराजश्रीने पुष्पसलिता साबरमती नदी में नौका में विराजमान होकर विसर्जन विधिकी पूर्णाहुति की आरती उतारी थी । सायंकाल ६-०० बजे प.पू. महाराजश्री की उपस्थिति में ओरियन्टल बिल्डींग से शोभायात्रा वापस मंदिर पहुंची थी । अमदावाद मंदिर में तथा नारायणघाट मंदिर में भव्य उत्सव मनाया गया था । समग्र व्यवस्था में को. पार्षद दिगम्बर भगत, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी, नटु स्वामी, राम स्वामी, तथा संत-पार्षद मंडल सहयोग किये थे । (शा. नारायणमुनिदास)

अधिकमास में थलतेज विस्तारमें प्रथम सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से एवं नारायणघाट मंदिर के महंत पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से थलतेज विस्तार में ता. २-९-१२ को प्रथम भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था, जिसमें अगल बगल के विस्तार के हरिभक्त मिलकर इस उत्सव को सम्पन्न किये थे । सर्व प्रथम कीर्तन-भजन के बाद पधारे हुये संतो में से शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने कथा का लाभ दिया था . कीर्तनकार पूरव पटेलने महाराजश्रकी मूर्ति का भाव उपस्थित करदेने वाला कीर्तन गाया था । बाद में स.गु.शा.स्व. निर्गुणदासजी, शा.स्व.ा हरिॐप्रकाशदासजीने अपने प्रवचन का लाभ दिया था । अन्य पधारे हुये संतो में नारायणघाट के महंत स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी, अभय स्वामी, को. मुनि स्वामी, माधव स्वामीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । अंत में पी.पी. स्वामीने इस विस्तार में प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से विस्तार में मंदिर का निर्माण हुआ यह बात कही । बाद में प.पू. महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । इस प्रसंग पर प.पू.औ. गादीवालाजी महिलावर्ग को आशीर्वाद देने के विये पधारी थी । सभा के यजमान धनवन्तभाई थे । प्रत्येक मास में थलतेज में सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है।

(शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदास)

बिलोदरा (चराडा) गांव से जेतलपुर पदयात्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से विलोदरा गाँव के समस्त हरिभक्त एक साथ बिलोदरा से अमदावाद श्री नरनारायणदेव तथा जेतलपुर धाम श्री रेवती बलदेव हरिकृष्ण महाराज की पैदल यात्रा करेंगे ऐसा संकल्प किये जब प.पू. आचार्य महाराजश्री इस गाँव में सर्व प्रथम पधारे थे। उस समय का यह संकल्प परिपूर्ण हो गया । इस भव्य पदयात्रा में इन पदयात्रियों को नारायणघाट में रात्रि विश्राम के समय स्वामी अभयप्रकाशदास तथा शा.स्वा. पी.पी. ने सत्संग का दिव्य लाभ दिया था । पदयात्रा में नारायणघाट के संत शा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा शा. दिव्यप्रकाशदासजी जोडाये थे ।

(भीखाजी विलोदरा)

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बालवा रजतजयंती वर्ष

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं प.पू.पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम) की प्रेरणा से अपने भावि आचार्य महाराजश्री की अध्यक्षता में श्री नरनारायणदेव युवक मडंल बालवा के रजत जयंती वर्ष में मंगल प्रवेश के निमित ता. २३-९-१२ को विविधआयोजन किया गया था । जिस में युवा शिबिर, किशोर मंडल शिबिर, बाल मंडल शिबिर, तथा भव्य सत्संग सभा तथा समस्त बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालके अध्यक्षस्थान पर महाभिषेक, सत्संग सभा, बाल मंडल, किशोर मंडल, बालिका मंडल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमो का भी आयोजन किया गया था ।

अन्य कार्यक्रम में व्याख्यान माला, कीर्तन-भजन, प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम भी हुआ था । इसके साथ भूतपूर्व युवक मडंल के प्रमुख, मंत्री इत्यादि का सन्मान तथा २५ गाँव के युवक मंडल, किशोर मंडल को आमंत्रित करके संमानित किया गया था । प.पू. लालजी महाराजश्री को २५ फूट का हार पहनाकर रजत जयंती का मंगल प्रवेश किया गया था । २५

बत्ती वाली आरती सजा कर महा आरती की गयी थी । महेमानो का सन्मान किया गाय था । गाँव के हरिभक्तों ने पू. पी.पी. स्वामी का सन्मान किया था । उदय महाराजने व्यसन मुक्ति के ऊपर सुन्दर उदाहरण के साथ प्रवचन किया था । सभा के अंत में प.पू. लालजी महाराजश्री अपने आशीर्वाद में कहा कि श्री नरनारायणदेव मे निष्ठा रखकर सत्संग में एक सूत्रता बनाये रखियेगा । इस तरह का सभी को आशीर्वाद दिये थे । बहनो की सभा में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के सानिध्य में जेतलपुर तथा अमदाबाद की सां.यो. बहनोने धर्म नियम, निश्चय, पक्ष रखेगी तो निश्चति ही आप सभी का कल्याण होगा । अन्त में प.पू. गादीवालाजीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दी थी । प.पू. लालजी महाराज के निवास का तथा प.पू. गीवालाजी के निवास की व्यवस्था एवं पूजन का लाभ प.भ. चौधरी गोवाबाई फताभाई ने किया था ।

इस प्रसंग पर जेतलपुर, माणसा, कांकरिया, महेसाणा, मूली, अमदावाद से संत पधारे थे। इस उत्सव का आयोजन भक्तिनंदन स्वामीने किया था । इसके साथ ही नारायणभाई का भी सहयोग सराहनीय था । रसोई, लाईट, मंडप, स्टेज, साउन्ड, इत्यादि कि व्यवस्था स्वयं सेवकोने की थी । (शा. भक्तिनंदन दास, चौधरी अमृतभाई, अल्केशभाई, विनुभाई

पवित्र अधिक मास में घाटलोडिया मंदिर में पंच दिनात्मक रात्रीय ज्ञान सत्र तथा समूह महापूजा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर में ता. २२-२-१२ से ता. २६-८-१२ तक श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा पंच दिनात्मक ज्ञान सत्र का आयोजन हुआ था । जिस में घाटलोडिया के अगल बगल विस्तार के हरिभक्त भी भाग लिये थे। जिस में शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी, शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी स.गु.शा. हरिकृष्णदासजी (महंत कालुपुर) शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट), शा. चैतन्यस्वरुपदासजी इत्यादि संतोने सतत पांच दिन तक निष्ठा, निश्चय, नियम, महिमा, पक्ष इत्यादि के विषय में महत्व को समझाया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की तरफ से छनाभाई साहबने शुभेच्छा व्यक्त की थी । १६-९-१२ को समूह महापूजा का आयोजन किया गया था ।

''अधिकस्याधिकं फलम्''

इस मुक्ति के साथ अधिक मास के समय युवक मंडल द्वारा ८० जितने हरिभक्तोने समूह महापूजा में बैठकर अलौकिक लौभ लिया था । महापूजा के मुख्य यजमान श्री जयेन्द्रभाई छोटालाल परीख थे । स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजीने महापूजा की महिमा को समझाया था । इस आयोजन में ट्रस्टी मंडल तथा युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी ।

(दिनेशभाई पटेल)

पवित्र अधिक मास में श्री स्वामिनारायण मंदिर मेधाणीनगर श्रीमद् भागवत दशम स्कंधरात्रीय पारायण

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से स्वामिनारायण मंदिर मेधाणीनगर सत्संग समाज द्वारा पवित्र अधिक मास में ता. १२-९-१२ से ता. १६-९-१२ तक रात्रीय पारायण स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी । पारायण की मुख्य यजमान पटेल शकरीबहन शकरचंद तथा पटेल जोइतीबहन बाबूभाई परिवार थे ।

कथा की पूर्णाहुति के प्रसंग पर ता. १६-९-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । साथ में कालुपुर मदिर के महंत स्वामी तथा निर्गुण स्वामी, देव स्वामी, इत्यादि संत भी पधारे थे । अपनी प्रेरक वाणी का सभी को लाभ दिये थे । अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । हरिभक्त कथा श्रवण करके धन्य हो गये थे ।

(शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदास)

अधिक मास में जेतलपुरधाम में ठाकुरजी का महाभिषेक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अधिक मास में भाद्र शुक्ल-८ को ता. ३-९-१२ से ९-९-१२ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण भक्तिनंदन स्वामी के वक्तापद पर श्री जयेशभाई, विनुभाई के यजमान पद पर हुई थी । ता. ३-९-१२ को भव्य शोभायात्रा के साथ शुभारंभ किया गया था । कथा के प्रसंग में आनेवाले सभी उत्सव को धूमधाम से मनाया गया था ।

ता. ४-९-१२ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । उस समय यजमान परिवार ने पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

ता. ३-९-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । उन्हीं के हाथों रेवती बलदेव हरिकृष्ण महाराज का महाभिषेक वेद विदि से किया गया । बाद में यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का सभा में विधिपूर्वक पूजन किया था । कथा की पूर्णाहुति में प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन अर्चन करके यजमान परिवार ने आरती उतारी थी । प्रत्येक धाम से पधारे हुये संतोने प्रसंगोचित प्रवचन किया था । बाद में पपू. लालजी महाराजश्री ने सभी को आशीर्वाद दिया था । इसके बाद अन्नकूट की आरती उतारने पधारे थे । सभा संचालन स्वा. हरिप्रकाशदासजी तथा पवित्रानंदजीने किया था । पू. पी.पी. स्वामी तथा पू. आत्मप्रकाश स्वामीने बहुत सुंदर व्याख्यान किया था । सभी व्यवस्था में पू. श्याम स्वामी, महंत के.पी. स्वामी,

वी.पी. स्वामी थे।

(महंत के.पी. स्वामी तथा भट्टजी जेतलपुर)

आदिश्वर नगर नरोडा श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम) की प्रेरणा से पवित्र अधिक मास में श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वर नगर नरोडा में अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि की गयी थी। इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । प्रथम ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में धुनि की पूर्णाहुति किये थे। संतोने धुनि की महिमा समझायी थी। अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। उन्होंने सभी से यह बताया कि मंदिर में बिराजमान मूर्ति चिंतामणी के समान है। हरिभक्त चरण स्पर्श करके धन्यता का अनुभव किये थे। ठाकुरजी की आरती करके प.पू. महाराजश्री विदा हुए थे।

(शा. भक्तिनन्दनदास, जेतलपुर)

नवनिर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (पंचवटी) में श्री सत्संगिभूषण पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से पवित्र अधिक मास में ता. १०-९-१२ से १६-९-१२ तक सत्संगिभूषण की कथा सर्वोत्कृष्ट कथाकार पू.पी.पी. स्वामी के वक्ता पद पर दंढाव्य देश में हुई थी। कथा प्रसंग में जिस गाँव की कथा आती उस गाँव के भक्त भोजन लेकर आते और सभी को परोसते। महेसाणा से खिचडी, डांगरवा से दूध, इत्यादि ता. १५-९-१२ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू. लालजी महाराजश्री साथ में पधारे थे। सभी को हार्दिक आशीर्वाद भी दिये थे। ता. १६-९-१२ को कथा की पूर्णाहुति के समय प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर कथा की पूर्णाहुति की थी । इसके बाद यजमान पविरार ने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था। प.पू. महाराजश्री ने सभी को आशीर्वाद देते हुये कहा कि आप सभी लोग नूतन मंदिर निर्माण में खूब सेवा की जियेगा जिससे भगवान की जल्दी प्रतिष्ठा हो सके।

इस प्रसंग पर अलग-अलग धाम से सन्त पधारे थे ।नारायणपुरा, जेतपुर, अमदावाद, जमीयतपुरा, सायला, महेसाणा इत्यादि स्थानो से संत पधारे थे। सभा संचालन वंदन प्रकाशने किया था । श्री नरनारायण युवक मंडल तथा बाल मंडल की सेवा प्रेरणा रुप थी।

(शा. भक्तिनन्दनदासजी, जेतलपुर)

श्रीहरि के प्रसादी के औला गाँव में पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रीहरि के समकालीन रतनबा के ओला गाँव में ता. १०-८-१२ से १६-८-१२ तक श्री रामचरित्र मान सकी कथा स्वामी पूर्णानंदजी ने की थी। इस शुभ प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। सभी ग्रामवासियों को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। इस कार्यक्रम में - जेतलपुर, अमदावाद, कांकरिया, जमीयतपुरा, माणसा, सायला, लींबडी, मकनसर से संत पधारे हुये थे। सभा संचालन स्वा. हरिप्रकाशदासजीने किया था । आयोजन स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने किया था। इस प्रसंग में हरि भक्त यजमान बनकर धन्यता का अनुभव किये थे।

(शा. भक्तिनन्दनदास, जेतलपुर)

अधिक मास महिने में महेसाणा मंदिर में ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर के महंत स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. पू.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा महेसाणा मंदिर के महंत स्वामी नारायणदासजी के मार्गदर्शन से ता. २-९-१२ को नारायणप्रसादजी के मार्गदर्शन श्री नरनारायणदेव का षोडशोपचार महाभिषेक प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम से सम्पन्न हुआ। सभा में यजमान परिवार द्वारा प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया गया । इस प्रसंग पर समूह महापूजा में २२५ यजमानो ने लाभ लिया था। पू.शा.पी.पी. स्वामीने व्याख्यान माला में बिराजमान होकर कथामृत का पान करवाया । जिस में मुख्य राम, श्याम, घनश्याम के संबंधका अलौकिक रिश्तों की समज प्रदान की। हरिभक्तों का सन्मान करके सभी ने अन्नकूट आरती के दर्शन करके प्रसाद ग्रहण किया । इस प्रसंग पर जेतलपुर महंतश्री के.पी. स्वामी, वयोवृद्ध संत श्याम स्वामी, शा. उत्तम स्वामी तथा शा. हरिप्रिय स्वामी उपस्थित थे । सभा संचालन शा. प्रेमप्रकाशदासने (महेसाणा)ने किया था।

(शा. वी.पी. स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर में अधिक महिने में श्री घनश्याम महाराज का महाभिषेक किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा वडनगर मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वामी नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से पवित्र अधिक महिने में वडनगर मंदिर में श्रीमद् सत्संगिभूषण नवदिनात्मक पारायण शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी के वक्तापद पर पूर्ण हुई । समग्र आयोजन प.भ. पटेल परसोत्तमभाई (कच्छी परिवार) तथा प.भ. मोदी रमणलाल नरोतमदास परिवारल (वडनगर) यजमान पद का लाभ लिया। शा.स्वा. घनश्यामप्रसाददासजी (कल्याणपुरा)ने सुदंर सभा संचालन किया था । इस प्रसंग पर इसंड से स्वामी श्री वल्लभदासजी तथा अहमदाबादा से शा. विश्वस्वरुपदासजी पधारे थे। ता. १३-८-१२ को कथा की पूर्णाहुति के समय श्री घनश्याम महाराज का षोडशोपचार अभिषेक तथा अन्नकूट आदि प्रसंग हुए। प्रासंगिक सभा में ट्रस्टी श्री नविनभाई मोदीने भावनापूर्ण प्रवचन दिया । इस प्रसंग में खेरालु, डभोडा,

सतवासणा, राजपुरा तथा विसनगर के हरिभक्तगण पधारे थे।
(मित पटेल तथा शैलेष भगत)

जेतलपुर द्वारा आयोजीत कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के महंत पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से पवित्र सावन महीने में श्री नरनारायणदेव के संसर्ग के गाँव में शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी के वक्ता पद पर पंचान्ह पारायण तथा सभाओं का आयोजन किया गया। जिसमें कथा तथा सत्संग का पान करवाया।

(१) ता. ५-८-१२ से ता. १०-८-१२ विरमगाँव में श्रीमद् भागवत दशम स्कंधपारायण में गाँव के भाविक भक्तोंने सुंदर लाभ लिया। जन्माष्टमी को कथा की पूर्णाहुति हुई।

(२) ता. १०-८-१२ से ता. १४-८-१२ कालीयाणा गाँव में श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन से पंचान्ह पारायण का आयोजन किया गया। जिस में बुजुर्गो तथा युवानोने भी भाग लिया।

(३) ता. १५-८-१२ से ता. १९-८-१२ मांडल गाँव में श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन पंचान्ह पारायण किया गया। पूर्णाहुति को मांडल से श्री स्वा. म्युझियम के दर्शन का आयोजन किया गया।

(४) जेतलपुर में श्री रेवतीजी बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज मंदिर में सम्पूर्ण सावन में श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया। वक्तापद पर स.गु.शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने (कलोल महंतश्री) ने कथामृत का पान करवाया था।

(५) जेतलपुर श्री स्वामनारायण मंदिर में (बहनो के) हवेली में पवित्र सावन महीने में तथा अधिक महीने में ''घनश्याम लीलामृत'' की कथा सां.यो. नर्मदाबाईने की।

(६) निम्नलिखित गाँवो में स.गु.शा. उत्तमप्रियदासजी (महेसाणा) तथा सगु.शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजीने कथा श्रवण का करवाया। जिस में मांडल युवक मंडलने सेवा में भाग लिया।

ता. १४-८-१२ डेडीयासण ता. २०-८-१२ से ता. २१-८-१२ वणोद, ता. २२-८-१२ छोटे उभडा, ता. २३-८-१२ बड़े उभड़ा तथा ता. २४-८-१२ कुणपुर
(शा. भक्तिनंदनदासजी, अरुण गज्जर, माडंल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद, महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में सावन तथा अधिक महीने में लधुरुद्र यज्ञ तथा समूह महापूजा का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में हरिभक्तोने भाग लिया। प.पू. बड़े महाराजश्रीने यज्ञ में श्रीफळ से पूर्णाहुति की। सभी यजमानो को श्री घनश्याम महाराजश्री का प्रसादी का हार पहनाकर सभी को प्रसन्नतापूर्वक आशीर्वाद दिये। (शा. दिव्यप्रकाश)

जेतलपुर में रवि सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा.स्वामी आत्मप्रकाशधासजी तथा पू. शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से जेतलपुर में प्रत्येक रविवार को रवि सभा का आयोजन किया जाता है. अभी तक कुल ८ रवि सभा हुई है। जिसमें ६० से ७० जितने युवान तथा बच्चे ज्ञान सत्र का लाभ प्राप्त करेंगे। सभा संचालन शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी तथा प.भ. गजेन्द्रसिंह दरबार, रणबीरसिंह दरबार, राजुभाई, दशरथभाई, जशवंतसिंह तथा भरतभाई दरजी आदि करेंगे।
(महंतश्री के.पी. स्वामी, जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार (कनखल रोड, शंकराचार्य चौक)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी की प्रेरणा से हरिद्वार मंदिरमें पवित्र अधिक महीने में ता. ३०-८-१२ से ता. ३-९-१२ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण स.गु.शा.स्वा. हरिजीवनदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। ता. ३१-८-१२ पूनम को अधिक महिने में ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक, अन्नकूट, महापूजा आदि उत्सव विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग में नारणपुरा, अहमदाबाद के हरिभक्तोंने यजमान पद का लाभ लिया। जिस में अ.नि. लवजीभाई भीमदास पटेल ह. रणछोडभाई, अ.नि. प्रभुदास उमेदभाई पटेल ह. चन्द्रकान्तभाई, रमेसभाई, भूपेन्द्रभाई तथा मावजीभाई वालजीभाई पटेल, घनश्यामभाई शनाभाई बारोट, परसोत्तमभाईदास (गवाडा), अ.नि. लालजीभाई लवजीभाई पटेल परिवार (देवपुरा) ह. जयंतीभाई पटेल, मनुभाई माधवलाल, वनमाली आदिने यजमान पद का लाभ लिया।
(कोठारी हरिप्रकाशदासजी, हरिद्वार)

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर द्वारा ब्लड डोनेशन केम्प का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से तथा रेड क्रोस सोसायटी के सहयोग से सिविल होस्पिटल के ठेलेसेमीया पीडीति मरीजो के लाभ हेतु ता. २६-८-१२ रविवार को एप्रोच मंदिर में ब्लड, डोनेशन केम्प का आयोजन किया गया। जिसमें ५३ हरिभक्तोंने अपना किमती ब्लड डोनेट करके समाज सेवा का उत्तम उदाहरण प्रदान किया था। समग्र कार्यक्रम में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी।
(गोरधनभाई सीतापरा)

सर्वोपरि छपैया मंदिर में श्री घनश्याम चरित्र कथा पारायण तथा सत्संगिजीवन पाराय का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से महंत ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजी की प्रेरणा से धंधुका निवासी अ.नि. रतिलाल देवतांदभाई सोनी तथा अ.नि. जीवतीबहन रतिलाल के स्मरण हेतु तथा अ.नि.स.गु. गवैया ब्र.स्वा. रामकृष्णानंदजी तथा अ.नि.स.गु.शा.स्वा. गोपालचरणदासजी की दिव्य प्रेरणा से छपैया में ठाकुरजी का महाभिषेक अन्नकूट तथा कथा पारायण का आयोजन किया गया। कथा के वक्तापद हरिस्वरुपानंदजी (महंतश्री कानपुर) लाभ लिया। जिस में प.भ. जयंतीभाई रतिलाल सोनी तथा अरविंदभाई आर. सोनी परिवारने यजमान पद का लाभ लिया। कथा प्रसंग पर संतोने पधारकर आशीर्वाद दिये। यजमान परिवार तथा उनके रिश्तेदारो में बाल स्वरुपश्री घनश्याम महाराज के जन्मस्थान में सुवर्ण दरवाजे तथा भोग आदि की बड़ी सेवायो में भाग लिया। अंत में अधिक मास में श्री घनश्याम महाराज के षोडशोपचार अभिषेक, अन्नकूट धूमनधाम से मनाया गया। इस प्रसंग में ब्र. पवित्रानंदजी तथा स्टाफ ने सुंदर सेवा की।

सत्संगिजीवन पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़ी गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजी की प्रेरणा से पवित्र अधिक महिनेमें मुंबई भक्ति महिला मंडल की तरफ से श्रीमद् सत्संगि जीवन सप्ताह पारायण शा.स्वा. आनंदस्वरुपदास के वक्ता पद पर सम्पन्न हुई। मुंबई में सत्संगी बहनोंने जन्मन स्थान में सुंदर सेवा की बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का आशीर्वाद लिया कथा का संचालन ब्र. स्वा. हरिस्वरुपानंदजीने किया था।

(ब्र. हरिस्वरुपानंदजी, ब्र. पवित्रानंदजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिज

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वामी माधवप्रसाददासजी की प्रेरणा से ठाकुरजी के मंदिर में भिन्न-भिन्न उत्सव मनाये गये। (कोठारी हरिभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत हरिवल्लभदासजी की प्रेरणा से तथा को. अमृतभाई, श्री महादेवभाई श्री प्रशांतभाई इत्यादिके सहयोग से श्रावण कृष्ण-८ मी रात्रि ८ से १२-३० बजे तक बोपल मंदिर में बाल स्वरुप श्री घनश्यामि महाराज के सन्मुख जन्मोत्सव मनाया गया था। इस के अलांवा श्री नरनारायणदेव बाल मंडल द्वारा श्री स्वामिनारयण भगवान के बालचरित्र की कथा गुजराती हिन्दी में दृष्टांत के साथ की गयी थी। बालकों के ऐसे उद्बोधन से संत प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये थे। बोपल, धुमा, आंबली तथा गोधावी के भक्त भगवान के चरित्र तथा भक्तों के चरित्रका निरुपण किये थे।

रात्रि में १२-०० बजे श्री कृष्ण जन्मोत्सव की आरती धूमधाम से की गयी थी। मंदिर को अच्छी तरह से सजाया गया था। श्रावण मास में विविधप्रकार से झूले को सजाकर ठाकुरजी को झुलाया गया था। अधिक मास में श्रीमद् भागवत दशम स्कंधकी कथा का आयोजन किया गया था।

(प्रवीणभाई उपाध्याय)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी घनश्यामप्रकासधासजी की प्रेरणा से पवित्र अधिकमास में माणसा मंदिर में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाहन पारायण शा.स्वा. हरिजीवनदासजी तथा घनश्याम स्वामी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई थी। कथा में कीर्तन भक्ति का आस्वाद गवैया स्वामीने करवाया था। इस प्रसं पर अधिकमास में ठाकुरजी का षोडशोपचार विधी से पूजन किया गया था। कथा की पूर्णाहुति प्रसंग पर जेतलपुर महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी विशेष रुप से उपस्थित थे। कथा के यजमान श्री दीपसिंह तथा श्री रविन्द्रसिंह को पू. शा.स्वा. आत्मप्रकासदासजीने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया था। स्वामीजीने तथा अन्य संतोने प्रासंगिक प्रवचन किया था। माणसा तथा अगल-बगल गाँव के हरिभक्त कथा श्रवण किये तथा देवदर्शन करके कृतार्थ हुये थे।

अधिक मास में विदुरनीती पारायण

स.गु.शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर विदुरनीति पारायण किया गया था। इस प्रसंग के अवकर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की स्थापना की गयी थी। यजमान की तरफ से प्रसा दकी सुंदर व्यवस्था की गयी थी। युवक मंडल के श्री अनिल तथा निलेश इत्यादि प्रेरणारुप बने थे। कथा श्रवण करके हरिभक्त धन्य हो गये थे। (शा. भक्तिकेशवदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वसई (गभला) ९६ वाँ वाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर वसई (डाभला) का ९६ वाँ पाटोत्सव ता. २२-८-१२ को विधिवत मनाया गया था। पाटोत्सव के यमजान धमुबा बालुजी चावडा परिवार ने लाभ लिया था।

इस प्रसंग पर महेसाणा मंदि रके महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी संत मंडल के साथ पधारे थे। संतो द्वारा ठाकरुजी का अभिषेक षोडशोपचार से किया गया था। गाँव के अगल बगल के हरिभक्त दर्शन का लाभ लिये थे।

ता. २१-८-१२ को घनश्याम महिला मंडल द्वारा महापूजा का सुंदर आयोजन किया गया था। जिस में विहार की

सां.कैलासबा तथा सां.यो. मंजूबा ने महापूजा की विधिकरायी थी।७५ बहनों ने लाभ लिया था। (भूपेशभाई भावसार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदोल में कथा-पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से नांदोल मंदिर में अधिक महिने में बहनो द्वारा श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा सां. नर्मदाबा, सां. संगीताबाई (जेतलपुर) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। आसपास गाँव की बहनों ने भी कथा का लाभ लिया। गाँव में पोथीयात्रा भव्यता से आयोजति की गयी। पांचवे दिन सां. बचीबा मंडल के साथ पधारी थी। कथा में देव तथा आचार्य महाराजश्री का माहात्म्य समजाया था।

(कोठारी विष्णुभाई नांदोल)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा में अधिक महिने में अभिषेक तथा पारायण आयोजीत की गई

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा - आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत .गु. स्वा. उत्तमप्रियदासजी एवं महंत शा.स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी की प्रेरणा से चराडवा गाँव के भक्तोंने यजमान पद का लाभ १-९-१२ से १०-९-१२ तक कार्यक्रम में लिया।

श्रीमद् सत्संगिभूषण शास्त्र का सप्ताह पारायण संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार, विद्वान स.गु.पू.शा.स्वा. निर्गुणदासजीने की। ता. ८-९-१२ को प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने तथा पू. श्रीराजाने पधारकर भक्तों को दर्शन का लाभ दिया। ता. ९-८-१२ की शाम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का स्वागत धूमधाम से संतो हरिभक्तोंने किया।

ता. १०-९-१२ को प्रातः प.पू. आचार्य माराजश्री के वरद हाथों ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक किया गया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री की शोभायात्रा में समस्त समाज भाव से नाच उठा था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करके तथा नूतन आफिस का उद्घाटन करके सभा में पधारे थे। जहाँपर कथाका रसपान, संतो का प्रवचन तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त करके हरिभक्त धन्यता का अनुभव किये थे। इस प्रसंग पर गाँव में हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी। प्रत्येक धाम से संत पधारे थे। सां.यो. बाई भी पधारी थी। (शा. सत्यप्रकाशदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपर

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वामी नरनारायणदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में श्रावण तथा अधिक मास में कथा पारायण का सुंदर आयोजन किया गया था। कालू भगत की सेवा प्रेरणाप्रद थी। (को. वी.एम. पटेल)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेकलेन्ड (न्युझीलेन्ड)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ओकलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण मास में विविधप्रकार से झूले को सजाकर ठाकुरजी को झुलाया गया था। इसके साथ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई गई थी। श्रीहरि की आज्ञा के अनुसार भागवत दशम स्कंधकी कथा स्वामी निर्गुणदाजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई थी। इस कथा का श्रवण करके हजारो मुमुक्षु भक्त जीवन को कृतार्थ समझे। शा. राधारमणदासने कीर्तन-भजन का लाभ दिया था। कृष्ण जन्मोत्सव रात्रि में मनाया गया। बाद में प.भ. डॉ. कान्तिभाई पटेल ने वक्ता श्री का पूजन किया था। यजमान पद का लाभ डॉ. कांतिभाई पटेल ने लिया था। पारायण के यजमान श्री सुरेशभाई अमीन, निरव इत्यादि थे। भगवान को नूतन वस्त्र धारण कराया गया था। ७०० से भी अधिक हरिभक्त कथा का श्रवण किये थे। सभा संचालन विपीनभाई ठक्करने किया था। भक्तों की सेवा प्रेरणारुप थी। (शा. तुषारभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में ७ वाँ पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कोलोनिया मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से २५ अगस्त से १ सितम्बर तक कोलोनिया मंदिर के ७वें पाटोत्सव प्रसंग पर नाना विधकार्यक्रम किये गये थे। इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। इस प्रसंग पर श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन की कथा स्वा. रामकृष्णदासजी ने की थी। युवान हरिभक्तों ने मंदिर को सुंदर ढंग से सजाया था। शुक्रवार सायंकाल कथा की पूर्णाहुति प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथों सम्पन्न हुई थी। शनिवार को प.पू. आचार्य महाराजश्री ठाकुरजी का पाटोत्सव अभिषेक षोडशोपचार विधिपूर्वक किया गया। अन्नकूट आरती के बाद प्रासंगिक सभा में यजमान द्वारा प.पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन आरती की गई तथा यजमान परिवारों का भी प.पू. महाराजश्री द्वारा सन्मान किया गया।

सभा में शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी, शा. विश्वप्रकाशदाजी, शा. विवेकसागरदासजी, व्रजवल्लभ स्वामी, घनश्याम स्वामी, श्रीजी स्वामी, शांति स्वामी, शा. राम स्वामी, धर्मकिशोर स्वामी, नरनारायण स्वामी तथा ज्ञानप्रकाश स्वामी की प्रेरणात्मक वाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेकलेन्ड में ७ वां पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा लेकलेन्ड मंदिर के पुजारी शा.स्वा. विवेकसागरदासजी तथा शा. विजयप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लेकलेन्ड में विराजमान ठाकुरजी का ७ वाँ

पाटोत्सव२४-८-१२ से २६-८-१२ तक धूमधाम से मनाया गया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री के वरद हाथों से देव का षोडशोपचार महाभिषेक किया गया था।

इस प्रसंग पर सुंदरकांड की कथा शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजीने की थी। अन्य मंदिरो से नरनारायण स्वामी, शा. के.पी. स्वामी, नीलकंठ स्वामीने धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था। अन्त में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सत्संगी भाई-बहनों की सेवा सराहनीय थी। (नीतिनभाई पटेल, प्रमुख)

प.पू. बड़े महाराजश्रीका एटलान्टा में पदार्पण

श्रीजी महाराज की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एटलान्टा मंदिर में छोटे-बड़े उत्सव बड़े धूम धाम से मनाये जाते हैं।

ता. १३-९-१२ से १७-९-१२ तक प.पू. बड़े महाराजश्री संत पार्षद मंडल के साथ ज्योर्जिया स्टेट के एटलान्टा तथा अगल-बगल के शहर में रहने वाले निष्ठावाले हरिभक्तों ने प.पू. बड़े महाराजश्री की पधरामणी करवाकर तथा भोजन कराकर आशीर्वाद प्राप्त किया था।

ता. १६-९-१२ को मंदिर में सुन्दर सभा का आयोजन किया गया था। जिस में प.पू. बड़े महाराजश्री का आगमन होते ही गाजे-बाजे के साथ भव्य स्वागत किया गया था। अधिक मास के निमित्त यहाँ के महंत स्वामी सत्यस्वरुपदासजी के वक्ता पद पर दशम स्कन्धकी कथा की आरती उतारकर पूर्णाहुति करके प्रसन्नता व्यक्त किये। साथ में पधारे हुये अहमदाबाद मंदिर के महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजीने प्रासंगिक प्रवचन किया था। अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद प्रदान किया था। हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होकर देव-आचार्य का दर्शन करके जीवन को धन्य समझा था। सभी को भोजन की उत्तम व्यवस्था की गयी थी। स्त्री-पुरुष दोनो मिलकर भोजन बनाने की सेवा कीये थे।

(श्री स्वामिनारायण मंदरि ह्युस्टन टेकसास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन टेक्सास

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत के.पी. स्वामी की प्रेरणा से अपने मंदिर में प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। श्रावण मास में स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने कथा पारायण का सुंदर लाभ दिया था। झूले का उत्सव तथा युवा शिबिर का आयोजन प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से किया गया था। अधिक मास में स.गु.शा.स्वा. वासुदेव के वक्ता पद पर श्रीमद् सत्संगिजीवन की कथा सम्पन्न हुई थी। ज्ञान स्वामी भी प्रेरणात्मक प्रवृत्ति में सहकार देते हैं। (रमेश पटेल)

पियोरिया चेप्टर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के पियोरीया चेप्टर में रविवार को सायंकाल ६ से ८ बजे तक सत्संग सभा होती है। बालकों के लिये सुदंर कार्य ६ से ८ बजे तक सत्संग सभा होती है। बालकों के लिये सुंदरकार्य क्रम होते हैं। ९ सितम्बर को परेशभाई पटेल के पुत्र के जन्मदिन के उपलक्ष्य में प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से बालकों के लिये सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। यहाँ पर धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ के हरिभक्त सत्संग करके दूसरों को भी भगवान की पहचान कराते हैं। (रमेश पटेल)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

नारायणपुरा (ता. कडी) : डॉ. गोविंदभाई एन. पटेल ता. २-८-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

अमदावाद-बापूनगर : प.भ. लालजीभाई पटेल ता. ३०-८-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

अमदावाद (नवोवास) : प.भ. हसमुखभाई भावसार की माताजी प्रभावतीबहन बलदेवभाई ता. ३१-८-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

अमदावाद : प.भ. सोनी शामलभाई (मोरबीवालाकी धर्मपत्नी) सोनी कमलाबहन ता. १०-९-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई हैं।

टींबा (ता. वढवाण) : प.भ. वालाभाई मलुभाई गोहिल श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।